जनवरी 2026

दादावाणी

Retail Price ₹ 20

रूम में सीलबंद पेट्रोल के डिब्बे हों,
लेकिन उस रूम में कोई बीड़ी पीए,
तब भी डिब्बे जल उठते हैं। पेट्रोल और अग्नि
इन दोनों को साथ में नहीं रखने चाहिए।
स्त्री-पुरुषों का साथ रहना भी ऐसा है,
अतः स्त्री-पुरुषों को 'बिवेर ऑफ पेट्रोल'
ऐसा बोर्ड लगाना चाहिए।

दाहोद : त्रिमंदिर का खात मुहूर्त : ता. 23 नवम्बर 2025

जांबुघोड़ा - पावागढ़ : यूथ रिट्रीट : ता 24 से 26 नवम्बर 2025

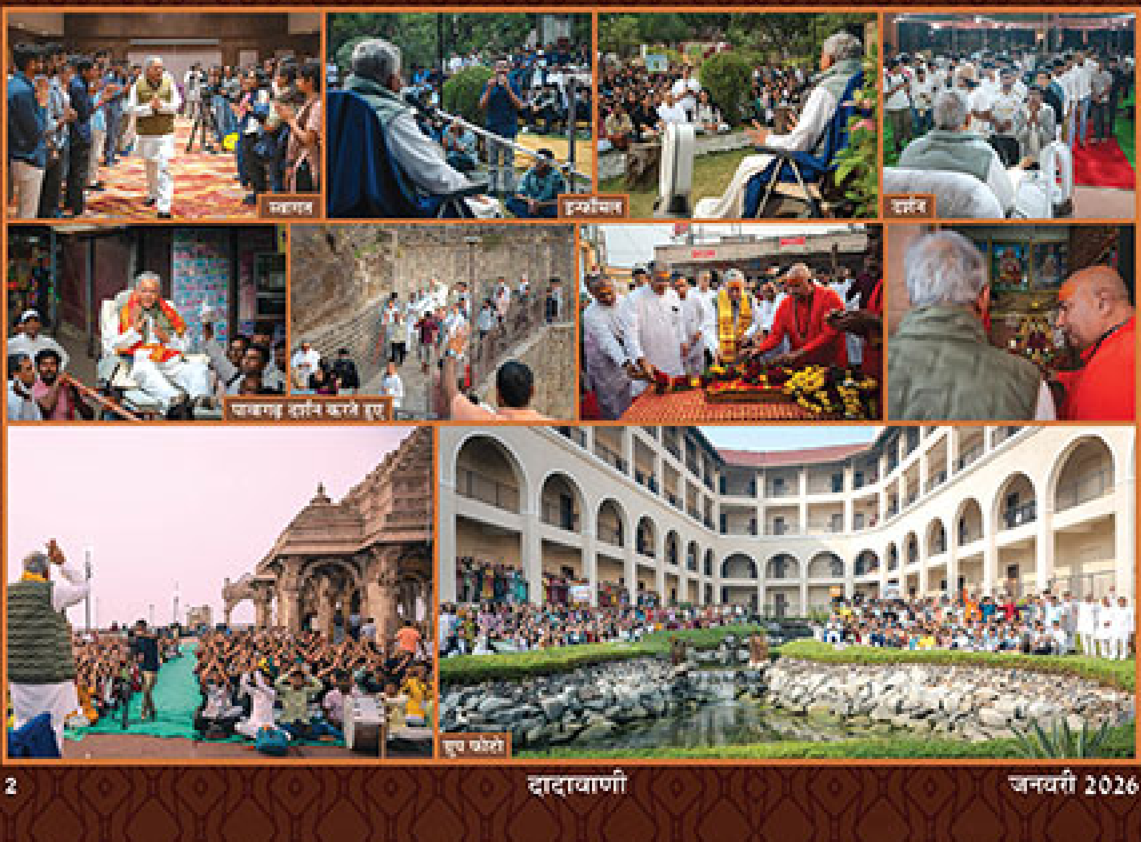

वर्ष : 21 अंक : 3
अखंड क्रमांक : 243
जनवरी 2026
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2026
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School, At-Chhatral, Tal: Kalol,
Dist. Gandhinagar - 382729

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

5 साल
भारत : 1000 रुपये

वार्षिक
भारत : 200 रुपये

भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

'मिश्रचेतन' : बिवेर ऑफ पेट्रोल

संपादकीय

इस जगत् में सबसे बड़ा फँसाव यदि कोई है तो वह विषय का है। पूरा जगत् अज्ञान मान्यता से विषय के सुख में उलझा हुआ है। विषय की आसक्ति में से कलह उत्पन्न होते हैं उसके बाद बैर बंधता है और इसलिए यह संसार खड़ा है। बैर बढ़ाने का मुख्य कारखाना कौन सा है? यह स्त्रीविषय और पुरुषविषय! बैर किससे बंधता है? अभिप्राय भिन्न हैं इसलिए, दो-मन एक नहीं हो सकते इसलिए आमने-सामने दावा दायर करते हैं। इस विषय का बैर बहुत ज़हरीला होता है। विषय सुख लेते हैं राग से और जब उसका परिणाम आता है तब द्वेष आता है। राग से लपेटा था, वह द्वेष से खुलता है और निरा बैर बाँधता है।

यह विषय है इसलिए मिश्रचेतन मिलता है। मिश्रचेतन यानी क्या? स्त्री के लिए पुरुष, वह मिश्रचेतन है और पुरुष के लिए स्त्री, वह मिश्रचेतन है। यह मिश्रचेतन तो 'फाइल' है। पूर्व जन्म का हिसाब बंध गया हो, 'देखत भूली' का हिसाब हो गया हो तो एक बार जाल में फँसने के बाद निकलना मुश्किल है। अपनी स्वतंत्रता चली जाती है और पूरी तरह से परवश कर देता है, इसलिए सतर्क रहना! अत: मिश्रचेतन का हिसाब ही रखने जैसा नहीं है, फिर भी यदि हो तो उस हिसाब का जाग्रत रहकर समभाव से *निकाल* कर देना।

प्रस्तुत अंक में, परम पूज्य दादाश्री मिश्रचेतन के साथ के विषय का ज़ोखिम समझाते हुए कहते हैं कि स्त्री-पुरुष को, दोनों को संतोष हों फिर भी इस कलियुग के कारण से वे बाहर कुछ देखते हैं तब वे आकृष्ट हो जाते हैं और उसमें मिठास लगने लगती है, वह सबसे बड़ा भय सिग्नल है। पेट्रोल और अग्नि इन दोनों को साथ में नहीं रख सकते। उसके बावजूद व्यवहार में, स्त्री-पुरुष का व्यवहार तो आएगा परंतु वहाँ इतने सतर्क होकर रहना कि दियासलाई नहीं लगनी चाहिए। सीलबंद पेट्रोल के डिब्बे से हवा भी बाहर नहीं निकलें, ऐसे होते हैं उसके बावजूद उस रूम में कोई बीड़ी पीए तो भी उस डिब्बे में आग लग जाती है इसलिए स्त्री-पुरुषों को 'बिवेर ऑफ पेट्रोल', ऐसी समझ रखकर सर्तक रहना चाहिए। यानी स्त्री-पुरुष में अनावश्यक व्यवहार बिल्कुल भी नहीं रखना चाहिए, वह भयंकर रोग है अत: मिश्रचेतन से दूर रहना। मिश्रचेतन तो मोक्ष जाने से रोक सकता है। मिश्रचेतन से जो सतर्क रहा, उसका कल्याण हो जाएगा!

मोक्षाभिलाषी हर एक व्यक्ति को इस कल्पित विषय के सुख से छूटने के लिए, विषय का विकराल स्वरूप समझकर, विषय के परिणामों को जानकर और विषय में सुख है इस 'बिलीफ' को तोड़ने का पुरुषार्थ करना आवश्यक है। महात्माओं को इस आत्मज्ञान प्राप्ति के बाद विषय से छूटना है, ऐसा भाव रखना चाहिए। यह ज्ञान ऐसा है कि विषय के बिना भी भीतर का सुख रहता है, अत: इस ज्ञान को जानकर रखना है। ज्ञान जाना हुआ होगा तो दर्शन में आएगा, समझ में आएगा। बिलीफ बदलते ही सभी विषय अपने आप स्वत: ही छूट जाते हैं, गिर जाते हैं। 'ज्ञान-आज्ञा' के पुरुषार्थ द्वारा हम सभी की विषय की ग्रंथि संपूर्ण निर्मूल हो जाए, यही हृदयपूर्वक अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

'मिश्रचेतन' : बिवेर ऑफ पेट्रोल

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

(सूत्र-1)

इस दुनिया में सबसे बड़ा फँसाव कोई हो, तो वह विषय है और उसमें कुछ भी सुख नहीं है। और उसकी वजह से झगड़े बेहिसाब होते हैं!

प्रश्नकर्ता : मैंने कई अच्छे महात्मा देखे हैं, जो बड़ी-बड़ी ज्ञान की बातें करते हैं, लेकिन उनका स्थूल क्लेश नहीं जाता। सूक्ष्म क्लेश तो शायद हो, वह नहीं जाता लेकिन स्थूल क्लेश अपने से क्यों नहीं जा सकता?

दादाश्री : ऐसा। इन सबका मूल है विषय। यदि दुनिया में सबसे बड़ा फँसाव कोई हो, तो वह विषय है और उसमें कुछ भी सुख नहीं है, भला! और उसकी वजह से झगड़े बेहिसाब होते हैं! घर में लड़ाई-झगड़े क्यों होते हैं? दोनों विषयी होते हैं, जानवर जैसे विषयी होते हैं, फिर सारा दिन टकराव होता रहता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन मुझे यह समझ में नहीं आता कि झगड़ा और विषय, इन दोनों का मेल कैसे बैठ सकता है? मारपीट तक का क्लेश और विषय, इन दोनों का मेल बैठ सकता है? क्या मनुष्य तब अंधा हो जाता होगा?

दादाश्री : अरे, आमने-सामने मारते हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन जब विषय के परमाणु खड़े होते हैं, तब क्या अंधा हो जाता होगा? उन्हें अंदर से याद नहीं आता होगा कि हम मारपीट कर रहे थे?

दादाश्री : मारपीट करें, तभी तो उन्हें विषय का मज़ा आता है न! और फिर स्वमान जैसा कुछ भी नहीं। पत्नी पति को धौल लगाए तो पति पत्नी को धौल लगाता है। फिर पति हमसे आकर कह जाता है कि मेरी पत्नी मुझे मारती है! तब मैं कहता भी हूँ कि, 'हें! तुझे तो ऐसी मिली! फिर तो तेरा कल्याण हो जाएगा!'

प्रश्नकर्ता : यह सब फज़ीता सुनते ही यों हैरान हो जाते हैं कि ये लोग कैसे जीते होंगे?

दादाश्री : फिर भी जी रहे हैं न! तूने दुनिया देखी न! और जीएँ नहीं तो क्या करें? मर थोड़े ही सकते हैं?

प्रश्नकर्ता : लेकिन हमें यह सब देखकर कँपकँपी छूट जाती है। फिर ऐसा होता है कि हर रोज़ ऐसे झगड़े चलते रहते हैं फिर भी पति-पत्नी को इसका हल लाने का मन नहीं होता, यह भी आश्चर्य है न?

दादाश्री : ये तो, कई बरसों से, जब से शादी की, तभी से ऐसा ही चल रहा है। शादी की तभी से एक ओर झगड़े भी जारी हैं और एक ओर विषय भी ज़ारी है! अत: ये सब लड़ाई-झगड़े वे अपनी गरज़ के मारे करते हैं। पत्नी जानती है कि ये आख़िर कहाँ जाएँगे? पति भी जानता है कि यह कहाँ जाएगी? ऐसे आमने-सामने गरज़ की वजह से चल रहा है।

इस संसार में सभी ने ऐसी मार खाई है,

लेकिन फिर भी वैराग्य नहीं आता, यह भी एक आश्चर्य है न! इसी तरह की मार, किसी दूसरी तरह की, तीसरी तरह की, पूरा संसार मार ही खाता रहा है। मार का अर्थ है फड़फड़ाना (दुर्व्यवहार करना), डाँटना, मतभेद होना, इन्हें भी मार कहते हैं। यह संसार निरा फँसाव है। फँसने के बाद निकल नहीं पाते। अरे, इस कीचड़ में गहरे उतर जाएँ, तब भी नहीं निकल पाते न! कीचड़ में धँसने के बाद जैसे-जैसे निकलने का प्रयत्न करते हैं वैसे-वैसे और भी अधिक धँसते जाते हैं!

(सूत्र-2)

ये तो विषय की भीख माँगते हैं, तो वे सभी जानवर से भी गए-बीते कहलाएँगे न! भूख लगी हो तो क्या भीख माँगनी चाहिए? कुछ शूरवीरता तो होनी चाहिए या नहीं?

स्त्रियाँ पति को धमकाती हैं, उसका क्या कारण है? पुरुष ज़्यादा विषयी होते हैं, इसलिए धमकाती है। ये स्त्रियाँ खाना खिलाती हैं, इसलिए नहीं धमकाती, विषय के कारण धमकाती हैं! यदि पुरुष विषयी नहीं होगा, तो कोई स्त्री धमकाएगी ही नहीं! निर्बलता का ही लाभ उठाती हैं। लेकिन यदि कमज़ोरी नहीं होगी, तो स्त्री कुछ भी नहीं करेगी।

स्त्री जाति कब वश में आती है? (पुरुष) यदि विषय में बहुत सेन्सिटिव (चंचल) हों, तो वह पुरुष को वश में कर लेती है! लेकिन यदि आप विषयी हों, लेकिन उसमें सेन्सिटिव नहीं हो जाओ तो वह वश में आ जाएगी! यदि वह 'खाने' (विषय के लिए) बुलाए और आप कहो कि अभी नहीं, दो-तीन दिन के बाद, तो वह आपके वश में रहेगी! वर्ना आप वश में हो जाते हो! यह बात मैं पंद्रह साल की उम्र में ही समझ गया था। कुछ लोग तो विषय की भीख माँगते हैं कि, 'बस आज के दिन दे दो!' अरे, विषय की भीख कभी माँगनी चाहिए? फिर तेरी क्या दशा होगी? स्त्री क्या करती है? सवार हो जाती है। सिनेमा देखने गए तो कहेगी, 'बच्चे को उठा लो।' अपने महात्माओं में विषय हो सकता है, लेकिन विषय की भीख नहीं होनी चाहिए। विषय और विषय की भीख, ये दोनों चीज़ें अलग हैं। जहाँ मान, कीर्ति, और विषयों की भीख नहीं होती, वहाँ भगवान रहते हैं।

यदि विषय में बहुत सेन्टिमेन्टल नहीं हो तो छूट जाएगा। विषय की भीख नहीं माँगनी चाहिए। कुछ लोग तो विषय की भीख माँगते हैं। अरे, पाँव भी पड़ते हैं! कुछ तो मुझे आकर ऐसा भी कह गए हैं कि, 'मेरी स्त्री विषय के लिए मना करती है, तो अब मैं क्या करूँ?' मैंने कहा कि, 'माँ कहना, तो फिर हाँ कर देगी!' अरे घनचक्कर, तुझे शर्म नहीं आती? मना करे तो क्या उसे 'माँ' कहेगा? 'जाने दे, नहीं चाहिए मुझे', कहना। यह तो खुद माँग करता रहता है फिर स्त्री धमकाती ही रहेगी न! और वह मना करे, वह तो और भी अच्छा है! 'भला हुआ छूटी जंजाल!' एकबार उसने मना किया, तो आप जीत गए। फिर वह माँगे तो उसका 'दावा' सुनना ही मत। फिर कहना, 'तूने मना किया इसलिए मैंने बंद कर दिया है, ताला ही लगा दिया और ताले को चाबी लगा दी।' लेकिन अरे खुद ही ढीला होता है, तो फिर क्या हो सकता है?

अभी तो मुझे कितने ही महात्मा आकर बता जाते हैं कि, 'मुझसे गिड़गिड़ाहट करवाती है।' तब मैंने कहा, 'अरे, तेरा रूआब चला गया तो क्या करवाए फिर? समझ जा न अभी भी, योगी बन जा न!' अब इनका कैसे पार पाएँ? इस दुनिया का पार कैसे पाएँ?

एक स्त्री अपने पति से चार बार साष्टांग करवाती है, तब एक बार छूने देती है। अरे, इसके बजाय समाधि ले ले तो क्या बुरा है? समुद्र में समाधि ले तो सीधे समुद्र तो है, झंझट तो नहीं! इसके लिए चार बार साष्टांग!

एक व्यक्ति तो मुझसे फरियाद करने आया मुंबई में और कहने लगा कि पाँच बार फाइल नंबर दो के पाँव छूए, तब जाकर मुझे संतुष्ट किया। अरे! यह किस प्रकार का व्यक्ति है तू, जानवर है या क्या भाई? क्या देखकर मुझे बताने आया तू? विषय की भीख माँगी जाती होगी कभी? क्या लगता है तुझे? अरे भाई! पाँच बार! अब मुझे सीधा बताने आया, इसलिए मुझे डाँटना पड़ा। फिर मुझसे कहने लगा कि अब रास्ता बताइए। तब मैंने कहा, 'अब यह छूट जाएगा, उसके बाद रास्ता बताया जा सकता है! फिर धीरे-धीरे वह सीधा हो गया। उल्टा चलेगा तो फिर क्या होगा?

वह मुझे ऐसा कहकर गया कि 'मुझे विषय की भीख माँगनी पड़ती है।' अरे भाई, विषय की भीख माँगते हो! कैसे आदमी हो! जानवर से भी गए-बीते हो! विषय की भीख माँगी जाती होगी? खाने की भीख नहीं माँगते, भूख लगी हो तो क्या भीख माँगते हैं कभी! कुछ शूरवीरता तो होनी चाहिए या नहीं? अब इतना अधिक असंयम कैसे पुसाए? आपको अनुचित नहीं लगता? यह उचित बात है? मनुष्य को शोभा देता है क्या? यानी थोड़ा बहुत संयम होना चाहिए, सभी कुछ होना चाहिए।

यह तो सब मटियामेट हो गया है इसलिए इस काल के करीब पचासी प्रतिशत मनुष्य तो जानवर में ही जाने वाले हैं बेचारे! मैं खुल्लम-खुल्ला बता रहा हूँ! इसलिए इस विषय की जड़ काट दी है ताकि फिर पेड़-पौधे अपने आप सूख जाएँ। मोक्ष में तो जाएँगे, लेकिन अगले जन्म में परेशान कौन करेगा? और कोई नहीं, सिर्फ मिश्रचेतन।

(सूत्र-3)

मिश्रचेतन यानी क्या? जब रास नहीं आए तब दावा करें। अतः ये सब सुख भोगना, लेकिन मिश्रचेतन का सुख मत भोगना। स्त्री के लिए पुरुष, वह मिश्रचेतन है और पुरुष के लिए स्त्री, वह मिश्रचेतन है।

प्रश्नकर्ता : मिश्रचेतन में क्या-क्या आता है?

दादाश्री : मिश्रचेतन यानी कुत्ते को लात मारकर निकाल दिया हो, तो उसके साथ बैर बाँधा कहलाएगा। रास्ते पर किसी स्त्री को धक्का मारा हो तो उसे भी मिश्रचेतन के प्रति हुआ दोष कहा जाएगा।

स्त्री के लिए पुरुष, वह मिश्रचेतन है और पुरुष के लिए स्त्री, वह मिश्रचेतन है। मिश्रचेतन यानी क्या? जब रास न आए तब दावा करें, अतः ये सब सुख भोगना, लेकिन मिश्रचेतन का सुख मत लेना। क्योंकि मतभेद होते हैं तब क्या होता है? दावा भी करते हैं, डायवोर्स भी लेते हैं। आँख में द्वेष दिखाई देता है, उसके बजाय आम अच्छा है। बेचारा मिश्रचेतन तो नहीं है! बिगड़ जाए उससे पहले उसे खा लेते हैं। मिश्रचेतन पर विश्वास मत रखना।

प्रश्नकर्ता : मिश्रचेतन से संबंधित फाइल होती है, उसमें एक ओर जागृति भी रहती है, एक ओर मन में मिठास भी लगती है, दूसरी ओर वह अच्छा नहीं लगता। ज्ञान मना करता है कि यह सब योग्य नहीं है। इसलिए दुविधा होती रहती है।

दादाश्री : वह पसंद नहीं है, उसका मतलब कि वह छूट रहा है! पसंद नहीं हो फिर भी

वह करार पूरा करना चाहिए न? जो पसंद नहीं हो वह फिर चिपकता ही नहीं है। ज्ञान प्राप्ति के बाद, जो पसंद नहीं हो वह फिर चिपकता ही नहीं है। अंदर ज़रा पसंद हो तभी चिपकता है। जो पसंद नहीं हो, वह चिपकता भी नहीं और ज़्यादा दिन टिकता भी नहीं है। एक-दो साल में, पाँच सालों में भी हल आ जाता है। इसलिए हर्ज नहीं है और जागृति रही तो फिर क्या चाहिए आपको? यह पसंद नहीं है, यह बात निश्चित हो गई।

यह तो करारी मामला है, कुदरत के करार आपकी सहमति से हुए हैं। अब वे करार भंग करें, तो चलेगा ही नहीं न!

(सूत्र-4)

इस विषय का बैर बहुत ज़हरीला होता है। बैर बढ़ाने का मुख्य कारखाना कौन सा है? यह स्त्री-विषय और पुरुष-विषय!

मिश्रचेतन के साथ व्यवहार करने जैसा है ही नहीं और करना पड़े तो अनिवार्य रूप से करना पड़ेगा, उससे तो बच ही नहीं सकते। जो संसारी है उसे तो अनिवार्य रूप से व्यवहार करना ही पड़ेगा। जैसे जेल में गया हुआ आदमी जेल में खुद की जगह साफ करके लीप रहा हो तो क्या हम ऐसा समझेंगे कि उसे जेल का शौक होगा, इसलिए लीप रहा होगा? नहीं, उसे जेल अच्छी तो नहीं लगती, लेकिन यहाँ पर आ गया है, अब फँस चुका है, तो यहाँ अब सोने के लिए साधन तो चाहिए न? लेकिन उसे जेल में रुचि नहीं होती। वह जगह लीपता ज़रूर है, लेकिन वहाँ उसकी इच्छा नहीं है। वहाँ पर उसे जेल का शौक नहीं है। उसी प्रकार इस विषय का शौक बहुत सोचकर खत्म कर देने जैसा है। विषय, वह सबसे बड़ा रोग है। पूरा जगत् इसी कारण उलझा हुआ है। सिर्फ विषय से ही बैर खड़े होते हैं और बैर से संसार चलता रहता है। सभी बैर आसक्ति में से खड़े होते हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी ऐसा ही हुआ न कि विषय से ही यह सारा संसार खड़ा हो जाता है?

दादाश्री : विषय, वे आसक्ति से उत्पन्न होते हैं, और फिर उनमें से विकर्षण होता है। जब विकर्षण होता है तब बैर बँधता है और बैर के 'फाउन्डेशन' (नींव) पर यह जगत् खड़ा है। आम के साथ बैर नहीं है और आलू के साथ भी बैर नहीं है। आलू में जीव हैं, बहुत सारे जीव हैं, लेकिन वे बैर नहीं रखते हैं। उनसे केवल नुकसान क्या होता है कि आपको दिमाग़ से ज़रा दिखना कम हो जाता है, आवरण बढ़ाता है। अन्य किसी तरह का बैर नहीं रखते। बैर तो ये मनुष्य में आया हुआ जीव रखता है।

इस मनुष्य जाति में ही बैर बंधा हुआ होता है। यहाँ से जाकर, वहाँ साँप बनता है और फिर काटता है। बिच्छू बनकर काटता है। बैर बंधे बगैर कभी भी ऐसा कुछ नहीं हो सकता।

प्रश्नकर्ता : आज देखने में कोई विषय संबंध नहीं है, लेकिन एक-दूसरे के बीच कोई बैर खड़ा होता हो, तो क्या इससे पहले कोई विषय संबंध हुआ ही होगा?

दादाश्री : बैर सिर्फ पूर्व जन्म के उदय की वजह से ही होता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह विषय के कारण या बिना विषय के भी हो सकता है?

दादाश्री : हाँ, विषय के बिना भी हो सकता है। अन्य अनेक कारण हो सकते हैं। लक्ष्मी के कारण बैर बँधता है, अहंकार के कारण बैर बँधता है, लेकिन यह विषय का बैर बहुत ज़हरीला होता

है। सबसे ज़्यादा ज़हरीला, इस विषय का बैर है। अरे, पैसों का, लक्ष्मी का, अहंकार से बैर बँधा हुआ हो, तो वह भी बहुत ज़हरीला होता है!

प्रश्नकर्ता : कितने जन्मों तक चलता है?

दादाश्री : अनंत जन्मों से तक भटकता रहता है। बीज में से बीज डलता है, बीज में से बीज डलता है, बीज में से बीज डलता है और वह सेंकना नहीं जानता न! कैसे सेंका जाए, ऐसा जानता नहीं न!

प्रश्नकर्ता : उसमें बैर कैसे बंधता है? अनंतकाल के लिए बैर बीज पड़ता है, वह कैसे?

दादाश्री : ऐसा है न, कि कोई मृत पुरुष या मृत स्त्री हो और ऐसा मान लो न, कि उसमें कोई दवाई भर दी और पुरुष, पुरुष जैसा ही रहे और स्त्री, स्त्री जैसी ही रहे तो हर्ज नहीं है, उसके साथ बैर नहीं बंधेगा क्योंकि वह जीवित नहीं है। जबकि यह तो जीवित है, यहाँ बैर बंधता है।

प्रश्नकर्ता : वह किस कारण बंधता है?

दादाश्री : अभिप्राय 'डिफरेन्स' हैं, इसलिए। आप कहो कि, 'मुझे अभी सिनेमा देखने जाना है'। तब वह कहेगी कि, 'नहीं, आज तो मुझे नाटक देखने जाना है'। यानी टाइमिंग मेल नहीं खाता। यदि एक्ज़ेक्ट टाइमिंग से टाइमिंग मिल जाए तो ही शादी करना। अपने यहाँ तो एक ही चीज़ करने जैसी है, कि बैर नहीं बढ़े! और बैर बढ़ाने का मुख्य कारखाना कौन सा है? यह स्त्री-विषय और पुरुष-विषय!

(सूत्र-5)

यह पूरा जगत् मिश्रचेतन से ही उलझा हुआ है। एक बार जाल में आने के बाद निकलना मुश्किल है। यह मिश्रचेतन तो महा ज़ोखिम है! संसार का बीज यही है।

दो मन एकाकार हो ही नहीं सकते। इसलिए दावे शुरू हो ही जाते हैं। इस विषय के अलावा अन्य सभी विषयों में एक मन है, एक ही पक्ष है इसलिए वे (अन्य विषय) दावा नहीं करते! जबकि मन वालों के साथ तो ज़ोखिम है। एक ही बार जिसके साथ विषय भोग किया हो तो उसकी कोख से जन्म लेना पड़ेगा, वर्ना वह जहाँ जाए, वहाँ जाना पड़ेगा! मिश्रचेतन के साथ शादी कर ली तो फिर क्या हो सकता है? मिश्रचेतन के दावों की तो बहुत मुसीबतें हैं! हमें बिल्कुल परवश कर देता है। इसलिए मिश्रचेतन का खाता रखने जैसा ही नहीं है। फिर भी यदि हो उसे क्या करना है? फिर उस खाते का समभाव से निकाल कर डालना है। खाता थोड़े ही फाड़ सकते हो? फेंक देने पर तो और ज़्यादा चिपकेगा। अतः निरंतर जाग्रत रहकर उसका निकाल कर देना।

शादी करने में हर्ज नहीं है। लेकिन हमेशा दोनों का मन अलग ही होता है और वहीं पर व्यापार करने जाएँ, तो द्वेष हुए बगैर नहीं रहता। फिर चाहे कोई भी व्यापार करो न! फिर वहाँ चाहे कितना भी पुरुषार्थ करो फिर भी भेद पड़े बगैर नहीं रहता न! अलग मन वालों में एकता कैसे संभव है? वह तो व्यापार का स्वाद जितने समय हो, उतने से समय तक के लिए ही दोनों के मन की एकता रहती है! लेकिन यदि उस स्वाद में संतोष नहीं मिले तो फिर तूफ़ान खड़ा हो जाता है। अतः भेद पड़े बगैर रहता नहीं न! क्योंकि वह 'फाइल' है इसलिए दावा कर सकती है। आप कहो, 'मुझे त्याग लेना है', तब वह कहेगी, 'नहीं, नहीं जाने दूँगी।'

यह पूरा जगत् मिश्रचेतन से ही उलझा हुआ है। यदि मिश्रचेतन समझ में आ जाए, तब तो यह जगत् उलझन में नहीं रहेगा। ये अन्य सभी शौक उलझा दें ऐसे नहीं होते। इस

मिश्रचेतन में तो आमने-सामने दावे दायर होते हैं। एक बार जाल में आने के बाद निकलना मुश्किल है। उस जाल में फँसने के बाद, उसमें से कोई निकल नहीं पाया है। हमारा यह विज्ञान ऐसा है कि दोनों को ज्ञान दे दें तो दोनों समभाव से निकाल करना सीख जाते हैं और हल आ जाता है। वर्ना लाखों जन्मों तक भी नहीं छोड़ता। आपको छोड़ने की इच्छा है, तब वह आपको नहीं छोड़ता और उसे छोड़ने की इच्छा है तब आप उसे नहीं छोड़ पाते। इस तरह कभी भी दोनों का टाइमिंग मिल नहीं पाता और इंजन मोक्ष की ओर जा नहीं पाता, ऐसा है यह मिश्रचेतन! खाने-पीने में परेशानी नहीं है। चार पूरणपूरी खाकर सो जाना। 'दादा' का नाम लेकर वह भोग भोगना, लेकिन यह मिश्रचेतन तो महा ज़ोखिम है! यही संसार का बीज है। एक राजा को जीत लिया तो उसकी सेना अपने काबू में आ जाती है। उसकी सेना भी अपने काबू में आ जाती है। कृपालुदेव ने इन सबसे तंग आ आकर यह कहा है। जो संसार में उलझाने वाला है, उस पर उन्होंने बहुत ज़ोर दिया है कि क्या ऐसी हालत! वे खुद कहते थे कि, 'संसार से तो बहुत समय से, कई जन्मों से तंग आ चुका था', लेकिन आखिर में उन्होंने काट दिया। यहाँ से काटा, वहाँ से काटा और तेज़ी से खत्म कर दिया। ग़ज़ब के पुरुष थे, ज्ञानी पुरुष थे! वे तो चाहे सो करें! विषय तो जीवित ज़ोखिम है, अन्य सभी ज़ोखिम तो मृत कहलाते हैं।

(सूत्र-6)

यह तो जीती-जागती 'फाइल' है। सामने मिश्रचेतन है और वह करार वाला है इसलिए दावा करेगा! ये बीज तो मिश्रचेतन के संग डलते हैं।

मिश्रचेतन तो कैसा होता है कि दोनों की मरज़ी में डिफरेन्स, दोनों का संचालन अलग। वहाँ खुद की इच्छा नहीं हो, फिर भी सामने वाले को सुख भोगने को चाहिए, तो क्या होता है? उसमें से फिर राग-द्वेष के कारखाने शुरू होते हैं।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा न कि राग-द्वेष का मूल स्थान ही यह है?

दादाश्री : हाँ, पूरे जगत् का मूल यहीं से शुरू हुआ है, अब्रह्मचर्य से। विषय पर कंट्रोल नहीं होने के कारण क्लेश है यह सारा। विषय पर काबू रखने वालों को कलह नहीं होता दुनिया में। विषय में सुख की तुलना में विषय की परवशता के दुःख अधिक हैं!

आपको घर में रोज़ के लड़ाई-झगड़े पसंद नहीं हों, तो फिर उसके साथ विकारी संबंध ही बंद कर देना। विषय तो निरी पाशवता है इसलिए यह पाशवता बंद कर देना।

प्रश्नकर्ता : विषय राग से भोगते हैं या द्वेष से?

दादाश्री : राग से, उस राग में से द्वेष उत्पन्न होता है। यह मिश्रचेतन तो 'फाइल' कहलाती है, लेकिन पूर्वजन्म का हिसाब बंध चुका है, 'देखतभूली' का हिसाब हो चुका है, इसलिए उससे बच ही नहीं सकता न!

इस जगत् में राग-द्वेष का मूल कारण ही यह है, मौलिक कारण ही यह है। यहीं से सारा राग-द्वेष शुरु हुआ है। पूरा संसार यहीं से शुरू हुआ है। अत: संसार बंद करना हो तो यहीं से बंद कर देना पड़ेगा। फिर भले ही आम खाओ, जो अच्छा लगे वह खाओ न! बारह रुपये दर्जन वाले आम खाओ न, कोई पूछने वाला नहीं है क्योंकि आम आपके विरुद्ध दावा नहीं करेंगे।

आप उन्हें नहीं खाओगे तो, वे कोई कलह नहीं करेंगे जबकि स्त्री-पुरुष के संबंध में तो आप कहो कि 'मुझे नहीं चाहिए।' तब वह कहेगी कि, 'नहीं, मुझे तो चाहिए ही।' वह कहे कि 'मुझे सिनेमा देखने जाना है।' तब अगर आप नहीं जाओगे तो कलह! जान पर बन आई समझो! क्योंकि सामने मिश्रचेतन है और वह करार वाला है इसलिए दावा करता है! ये बीज तो मिश्रचेतन के संग डलते हैं। फिर मिश्रचेतन दावा करता है। अनंत जन्मों के लिए बैर बाँध देता है। वह छोड़ता नहीं है फिर।

इन चार इन्द्रियों के विषय, कोई परेशान नहीं करते और यह पाँचवाँ जो विषय है, स्पर्श विषय है, वह तो सामने जीवंत व्यक्ति के साथ है! वह दावा करे, ऐसी है अत: सिर्फ स्त्री विषय में ही आपत्ति है। यह तो जीती-जागती 'फाइल' है। आप कहो कि, 'अब मुझे विषय बंद करना है।' तब वह कहेगी कि, 'ऐसा नहीं चलेगा। फिर शादी क्यों की थी?' स्त्री तो शिकायत करती है। यानी वह जीवित 'फाइल' तो दावा करती है और दावा करे तो वह पुसाएगा ही कैसे? अत: जीते-जागते व्यक्ति के साथ विषय करना ही मत। दावा तो दायर करती ही है लेकिन फिर धमकाती है और आपका तेल निकाल देती है। हम तो भगवान से भी दबकर नहीं रहना चाहते तो फिर क्या ऐसे पत्नी के दबाव में रह सकते हैं? क्या सुख है उसमें? और आप कितने सुखी हो गए? और कितने मोटे हो गए? बल्कि तेज नष्ट हो जाता है! इसमें क्या मिलता है? पूरा *पुद्गल* का सार खत्म हो जाता है! वह सार शरीर में रहता है तब दिमाग़ खिलता है, वाणी कैसी निकलती है! जागृति कैसी रहती है! उसकी तो बात ही अलग है न! उस सार को फिर खो देता है न, फिर क्या हो सकता है? जागृति कैसी रहेगी!

(सूत्र-7)

इस मिश्रचेतन के विचार आएँ तो उगने ही मत देना। उन्हें तो उखाड़ ही देना, तो एक दिन इससे हल आएगा।

हमें ऐसा लगे कि यह विषय-विकार का आकर्षण हुआ कि तुरंत प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए और कोई विषय-विकार का विचार अंदर से उगा तो उस पौधे को तुरंत ही उखाड़कर बाहर फेंक देना। बस, जो ये दो (काम) करेगा, उसे फिर दिक्कत नहीं होगी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन जागृति और यह, दोनों एक साथ रह सकते हैं?

दादाश्री : नहीं, जागृति होगी तभी यह हो पाएगा, वर्ना नहीं हो पाएगा न!

यह पौधा उग रहा हो, तभी से समझ जाते हैं कि यह पौधा बिछुआ (खुजली वाला पौधा) है इसलिए उसे उगते ही उखाड़कर फेंक देना। वर्ना चिपक जाएगा तो उससे पूरे शरीर पर जलन होगी। इसलिए फिर से नहीं उगे उस तरह से फेंक देना। उसी तरह जब इस मिश्रचेतन के विचार आएँ तो उगने ही मत देना।

मिश्रचेतन से संबंधित बीज को तो उगते ही यों जड़ से उखाड़ देना है। आपको क्या करना है? उसे तो उखाड़ ही देना है, तो एक दिन इससे हल आएगा। वर्ना यदि एक भी उगा तो कितने ही जन्म बिगाड़ देगा। भगवान ने विषय के पौधे को ही उखाड़ देने को कहा है। अन्य पौधे तो भले ही उगें, वे ज़ोखिमी नहीं हैं लेकिन मिश्रचेतन ज़ोखिमी है।

अब यदि ऐसी जागृति रहेगी तो व्यक्ति आरपार देख सकेगा, वर्ना यह तो मूर्च्छा है। यह तो चादर में लिपटा हुआ मांस है। पूरी दुनिया

का सारा कचरा इस शरीर में हैं, फिर भी इस चादर की वजह से कितना मोह होता है! वह मोह किस से उत्पन्न होता है? अजागृति से! फिर बाद में पछताना भी पड़ता है न? पछताना यानी क्या? पश्चाताप। पश्चाताप यानी अंदर चुभता रहता है। इसके बजाय तो जागृति रहे तो कितना अच्छा! जागृति यदि नहीं रहती हो तो फिर शादी कर। हमें उसमें हर्ज नहीं है। शादी यानी *निकाली* चीज़। वर्ना जागृति रखनी पड़ेगी। अभी तक निरी अजागृति ही थी। यह तो उसमें से यह जागृति रखना बाकी रहा। एक सौ आठ दीये हों, उनमें से बारह दीये तो जलाए। बाद में तेरहवाँ, चौदहवाँ ऐसे जलाते जाना।

प्रश्नकर्ता : जागृतिपूर्वक भान में होने के बावजूद आकृष्ट हो गए, अपना वहाँ कुछ चला नहीं, तो क्या करना चाहिए? उसका कितना दोष लगता है?

दादाश्री : दोष तो है ही न! वैद्य ने कहा हो कि मिर्च मत खाना और आप मिर्च खा लो, तो क्या होगा? लेकिन ऐसे फूलिश (मूर्ख) तो बहुत नहीं होते, कुछ ही होते हैं और उसने मिर्च खाई तो फिर उसका रोग बढ़ेगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अब उसे क्या करना चाहिए? उपाय तो होना चाहिए न?

दादाश्री : प्रतिक्रमण करना है, और क्या?

प्रश्नकर्ता : लेकिन क्या ज्ञानी को नहीं बताना चाहिए? जिन्होंने आज्ञा दी हो, उन्हें बताना तो पड़ेगा न?

दादाश्री : हाँ, बता दिया, फिर भी प्रतिक्रमण करने हैं। बाकी, अगर वह मिर्च खा ले तो, उसमें ज्ञानी थोड़े ही ज़हर खा लेंगे?

कभी अंदर खराब विचार उगे और उसे निकाल देने में देर हो जाए तो ज़रा बड़ा प्रतिक्रमण करना पड़ेगा। वर्ना विचार उगते ही तुरंत निकाल देना चाहिए, उखाड़कर तुरंत फेंक देना चाहिए। बाकी, यह विषय-विकार ऐसा है कि एक सेकन्ड के लिए भी, ज़रा सा भी नहीं रहने देना चाहिए, वर्ना पेड़ बनते देर नहीं लगेगी। इसलिए उगते ही तुरंत उखाड़कर फेंक देना। जैसे कि हमें गेहूँ बोने हों और तंबाकू का पौधा उग जाए तो उसे तुरंत निकाल देते हैं। उसी तरह इसमें भी विषय को उखाड़ देना चाहिए।

(सूत्र-8)

मिश्रचेतन तो ऐसी लपेट में लेता है कि अनंत जन्मों तक भी वह छूट नहीं पाता। इसलिए भगवान ने कहा है कि मिश्रचेतन से दूर रहना!

स्त्री, वह तो मिश्रचेतन है। चेतन से शादी करना है, जबकि ये तो मिश्रचेतन से शादी करते हैं। माता-पिता को मालूम ही नहीं है न, ध्यान ही नहीं रखते कि बेटा कौन से मील पर खड़ा है और उसे क्या बेचैनी (परेशानी) है? माता-पिता अपने दु:ख में और बेटा अपने दु:ख में! यह मिश्रचेतन तो दावा करता है! उन्हें सिनेमा देखने जाना हो और आपको पसंद नहीं हो, फिर भी वह कहेगी कि, 'आपको आना पड़ेगा।' तो आपको जाना पड़ेगा! इतना ही नहीं, लेकिन 'आपको बच्चे को भी उठाना पड़ेगा' ऐसा भी कहेगी। अरे, बच्चा भी उठवाया मुझसे? हाँ। लेकिन क्या हो सकता है? यदि बेवकूफ बनना हो तो शादी करना इस काल में!

प्रश्नकर्ता : लेकिन जिसने शादी कर ली है, अब वह क्या करे?

दादाश्री : अपनी इच्छानुसार थोड़े ही होता है? 'व्यवस्थित' की जो फिल्म है, वह छोड़ती नहीं न उसे!

पहले तो इतना अच्छा था कि चाहे कैसी भी बीवी लेने जाए, फिर भी बहुत हुआ तो बीवी की दो-तीन शर्तें होती थीं। 'पानी की मटकी कबूल?' तब वह कहता, 'कबूल।' 'लकड़ी का गट्ठर कबूल?' तब पति कहता, 'कबूल।' निकाह पढ़ते समय इतनी शर्तें कबूल करवाती थी। 'पानी भरकर लाए, जंगल में से लकड़ियाँ ले आए, वह अच्छा है।' लेकिन आज की पत्नियाँ तो क्या कहेंगी? 'इस समय सिनेमा में आना पड़ेगा, वर्ना आपके दोस्त के साथ कभी जाते देख लिया तो आपकी खैर नहीं!' 'अरे! मैंने तुझसे शादी की है या तूने मुझसे शादी की है?' इसमें किस ने किस से शादी की? लेकिन यह तो मिश्रचेतन है। और फिर ये सब तो पढ़ी-लिखी हैं! यदि उनसे कह दिया कि 'तू नहीं समझेगी' तो आपका तेल निकाल देगी! इसमें सुख है ही नहीं। इससे तो 'फाइल' बढ़ती है। इन 'फाइलों' के साथ फिर क्लेश होता है, फिर घर की हो या बाहर की! अत: मिश्रचेतन के साथ हिसाब शुरू मत करना, वर्ना वह क्लेम (दावा) करेगी!

यदि बिस्तर पर नहीं सोएँ और पत्थर पर सो जाएँ तो क्या बिस्तर दावा करेगा कि क्यों मुझे छोड़कर पत्थर पर सो रहे हो? जबकि मिश्रचेतन तो दावा करता है कि आज क्यों अलग हो गए? छोड़ती नहीं। अलग करने जाएँ तो बल्कि पास आएगी! अत: मिश्रचेतन के साथ झंझट में मत पड़ना! आलू के साथ अनबन हो और आलू नहीं लाएँ तो आलू शोर नहीं मचाएँगे और उन्हें नहीं खाएँ फिर भी कुछ नहीं बोलेंगे! लेकिन मिश्रचेतन तो ऐसी लपेट में लेता है कि अनंत जन्मों तक भी वह छूट नहीं पाता। इसलिए भगवान ने कहा है कि मिश्रचेतन से दूर रहना! स्त्री से दूर रहना! वर्ना मिश्रचेतन तो मोक्ष में जाने से रोके, ऐसा है!

ये पान-बीड़ी ये भी लफड़ा ही कहलाते हैं। लेकिन इन लफड़ों से तो, ऐसा मानो न, कि किसी दिन छूट सकेंगे, लेकिन वे लफड़े तो नहीं छूटेंगे। जीवित लफड़े हैं न! हम जीवित को लफड़ा कहते हैं। उन लफड़ों को तो चला सकते हैं। वे तो निर्जीव ही हैं न? सिर्फ अपनी ही शिकायत है न? हम शिकायत करते हैं तभी तक न? बाकी उनकी किसी तरह की शिकायत नहीं है न! उन्हें छोड़ दें तो ज़बरदस्ती है कुछ? और जीवित लफड़ों के साथ तो कोई परेशानी हुई तो दावा करते हैं। आप दावा छोड़ दो, फिर वे दावा करते हैं। वही बड़ी मुसीबत है!

(सूत्र-9)

यह विषय ही ऐसा है कि भटका दें। हमने जो आत्मा दिया है, उसे भी फिंकवा दें।

अक्रम यानी क्या? कर्म खपाए बिना ज्ञान प्राप्त हुआ है। अभी तक किसी प्रकार के कर्म नहीं खपाए हैं। अत: बात को समझ लेना है। इसमें अन्य कुछ बाधक नहीं है! और यह विषय एक ऐसी चीज़ है कि इस ज्ञान को उलट दे। सिर्फ यह विषय ही ऐसा है। अन्य सब कुछ भले ही रहा। जीभ के विषय, वे सभी दावा नहीं करते। वे चेतन के साथ नहीं हैं, वे अचेतन हैं जबकि यह तो मिश्रचेतन है। इसलिए इस विषय में तो आपकी इच्छा नहीं हो फिर भी वश में होना पड़ता है, वर्ना वह दावा कर सकती है और कभी भटका भी सकती है। अत: इसमें बहुत जागृति रखना। इस वजह से यहाँ तो कुछ लोग हमेशा के लिए व्रत ही ले लेते हैं और हम देते भी हैं। या फिर कोई सालभर के लिए ट्रायल के तौर पर लेता है। फिर ऐसा करते-करते शक्ति बहुत बढ़ जाती है। यह विषय ही ऐसा है कि भटका दे। हमने जो आत्मा दिया है, उसे भी फिंकवा दें।

ये अवस्था दृष्टि से देखने पर ही उसका असर

होता है। अवस्था दृष्टि से ही आकर्षण-विकर्षण है, तत्वदृष्टि से नहीं है। अवस्था में तन्मयाकार हो जाए कि तुरंत ही अंदर लोहचुंबकत्व उत्पन्न हो जाता है और उससे फिर आकर्षण शुरू होता है।

प्रश्नकर्ता : लोहचुंबक और पिन दोनों आमने-सामने आते हैं, तब आकर्षण होता है। अब यह आकर्षण नाबूद कब होगा?

दादाश्री : यह तो हमेशा रहेगा ही। जब तक लोहा लोहे के भाव में है, तब तक रहेगा। यदि लोहचुंबकत्व उतर जाए तो आकर्षण चला जाएगा।

इसलिए हम अक्रम विज्ञान में तो आपकी खुद की पत्नी के साथ के अब्रह्मचर्य के व्यवहार को हम 'ब्रह्मचर्य' कहते हैं लेकिन वह विनयपूर्वक और बाहर किसी स्त्री के प्रति दृष्टि नहीं बिगड़नी चाहिए और दृष्टि बिगड़े तो तुरंत धो डालना चाहिए तो उसे, इस काल में हम 'ब्रह्मचारी' कहते हैं। दूसरी जगह पर दृष्टि नहीं बिगड़ती, इसलिए ब्रह्मचारी कहते हैं। वह क्या कोई ऐसा-वैसा पद है? और फिर लंबे समय बाद, जब उसे समझ में आता है कि इसमें भी बहुत गलतियाँ हैं, तब हक़ का भी छोड़ देते हैं। बहुतों ने छोड़ दिया है। यह तो, इस जगत् में सबसे बड़ी अहितकारी चीज़ कोई हो तो सिर्फ यह स्त्री विषय ही है!

(सूत्र-10)

'यह स्त्री है' ऐसा देखते हैं, वह पुरुष के अंदर रोग है तभी उसे स्त्री दिखती है, वर्ना आत्मा ही दिखेगा और 'यह पुरुष है' ऐसा देखती है, तो वह उस स्त्री का रोग है। निरोगी होंगे तो मोक्ष होगा।

इस जगत् में स्त्री को पुरुष का और पुरुष को स्त्री का आकर्षण कुछ उम्र तक रहता ही है। उन्हें देखने से ही कॉज़ेज़ उत्पन्न होते हैं। लोग कहते हैं, 'देखने से क्या होता है?' अरे, देखने से तो निरे कॉज़ेज़ ही उत्पन्न होते ही हैं। लेकिन यदि 'दृष्टि' दी है तो देखने से कॉज़ेज़ उत्पन्न नहीं होंगे। पूरा जगत् व्यू पोइन्ट से देखता है, जबकि ज्ञानी ही 'फुल' (पूर्ण) दृष्टि से देखते हैं।

ये लोग तो क्या कहते हैं कि, मुझे स्त्री के लिए बुरे विचार आते हैं। अरे! तू जब देखता है, तभी फिल्म तैयार हो जाती है। वह बाद में रूपक में आती है, तब फिर उसके लिए शोर मचाता है कि ऐसा क्यों होता है? फिल्म, वे कॉज़ेज़ हैं और रूपक, वह इफेक्ट है। हममें कॉज़ेज़ ही नहीं पड़ते। जिनमें कॉज़ेज़ पड़ते ही नहीं, उन्हें देहधारी परमात्मा ही कहा जाता है। स्त्री, वह तो आत्मा पर एक तरह का इफेक्ट है। स्त्री भी इफेक्ट है, पुरुष भी इफेक्ट है। वह इफेक्ट आप पर नहीं हो तो ठीक है। अब स्त्री को आत्मा रूप देखो, *पुद्गल* को क्या देखना है? ये आम सुंदर भी होते हैं और सड़ भी जाते हैं, इनमें क्या देखना है? जो सड़ता नहीं, बिगड़ता नहीं, वह आत्मा है, उसे देखना है। हममें तो स्त्री भाव, पुरुष भाव ही नहीं है। हम उस बाज़ार में जाते ही नहीं।

'यह स्त्री है' ऐसा देखते हैं, वह पुरुष के अंदर रोग है तभी उसे स्त्री दिखती है, वर्ना आत्मा ही दिखेगा और 'यह पुरुष है' ऐसा देखती है, तो वह उस स्त्री का रोग है। निरोगी होंगे तो मोक्ष होगा। इस समय हमारी निरोगी अवस्था है। इसलिए मुझे ऐसा विचार ही नहीं आता। पैकिंग अलग हैं, सिर्फ ऐसा रहता है, वह स्वाभाविक है। लेकिन ऐसा *लक्ष* रहे कि यह स्त्री है और यह पुरुष है, ऐसी सब झंझट नहीं है। वह तो अंदर यह रोग रहता है, तभी तक ऐसा दिखता है। जब तक यह रोग है, तब तक आपको परहेज

में क्या करना चाहिए? कि उपयोग जाग्रत रखना चाहिए। ऐसा दिखे कि तुरंत ही शुद्धात्मा देख लो। यह भूल हुई, उसे 'देखतभूली' कहते हैं। पुरुष में पुरुष का रोग नहीं होगा, तो 'यह स्त्री है' ऐसा नहीं दिखेगा और स्त्री में स्त्री का रोग नहीं होगा, तो 'यह पुरुष है' ऐसा नहीं दिखेगा। सभी में आत्मा दिखेगा।

प्रश्नकर्ता : इतनी अधिक जागृति नहीं रह पाती न?

दादाश्री : जागृति नहीं रहती, तो मार ही खानी पड़ेगी। यह ब्रह्मचर्य तो जिसे बहुत जागृति रहती है, उसीके काम का है।

क्रमिक मार्ग में तो स्त्री को पास में रखते ही नहीं। क्योंकि वह बहुत बड़ा ज़ोखिम है। स्त्री, वह पुरुष के लिए ज़ोखिम है। पुरुष, वह स्त्री के लिए ज़ोखिम है। लेकिन मेरा कहना है कि इसमें स्त्री का दोष नहीं है, स्त्री तो आत्मा है, दोष तेरे स्वभाव का है।

(सूत्र-11)

यह विषय की योजना तो मिश्रचेतन के साथ की योजना है। हम छोड़ दें, फिर भी सामने वाला दावा करे तो क्या होगा? इसलिए यहाँ सावधान रहने को कहा है।

कोई स्त्री खड़ी हो उसे देखा, लेकिन तुरंत नज़र वापस खींच ली। फिर भी वह दृष्टि तो वापस वहीं की वहीं जाती है, इस तरह दृष्टि वहीं आकृष्ट होती रहे तो वह 'फाइल' कहलाती है। यानी इतनी ही गलती इस काल में समझ लेनी है। पिछली जो फाइल खड़ी हुई हो, भले ही छोटी सी, लेकिन 'फाइल' कि जो आपको आकर्षित करे ऐसी हो, ऐसा आपको पता चले कि यह 'फाइल' है तो वहाँ पर सावधान रहना है। अब सावधान रहने के अलावा और क्या करना है? जिसे शुद्धात्मा देखना आ गया है, उसे उसके शुद्धात्मा देखते रहना है। उससे वह पूरी तरह से चली जाएगी।

प्रश्नकर्ता : साथ-साथ प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान भी करने हैं न?

दादाश्री : हाँ, वह तो करना ही पड़ेगा न!

प्रश्नकर्ता : आकर्षण की फाइल वह कहीं 'कन्टिन्युअस' (निरंतर) नहीं रहती। लेकिन जब यह आकर्षण उत्पन्न होता है, जैसे यहाँ लोहचुंबक रखा हो और यह पिन यहाँ से गुजरी और खिंची गई, लेकिन तुरंत पता चले कि खिंची गई, तो इसे तुरंत ही वापस खींच लेना चाहिए।

दादाश्री : जितना भी पता चलता है वह इस 'ज्ञान' की वजह से पता चलता है, वर्ना दूसरा तो मूर्छित हो जाता है। इस 'ज्ञान' की वजह से यह पता चलता है इसलिए फिर आपको उसका प्रतिक्रमण करना पड़ेगा। फिर आपको निर्मल दृष्टि दिखानी चाहिए। अपने में रोग हो तभी सामने वाला व्यक्ति अपना रोग पकड़ सकेगा न? और अपनी निर्मल दृष्टि देखे तो? दृष्टि निर्मल करना, वह आता है या नहीं आता?

प्रश्नकर्ता : ज़रा और समझाइए कि दृष्टि कैसे निर्मल करनी है?

दादाश्री : 'मैं शुद्धात्मा हूँ' इस जागृति में आ जाने के बाद, दृष्टि निर्मल हो जाती है। अगर नहीं हुई हो तो शब्दों में पाँच-दस बार बोलना कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ' तब भी वापस आ जाएगी और 'दादा भगवान जैसा निर्विकारी हूँ, निर्विकारी हूँ' ऐसा बोलेंगे तब भी वापस आ जाएगी। इसका उपयोग करना पड़ेगा, बाकी कुछ नहीं। यह तो विज्ञान है, तुरंत

फल देता है और यदि ज़रा सा भी असावधान रहो तो दूसरी तरफ फेंक दें ऐसा है!

अन्य कोई चीज़ बाधक हो, ऐसी नहीं है। स्त्री का स्पर्श हो जाए और फिर भीतर आपका भाव बदल जाए तो वहाँ जागृति रखनी है क्योंकि स्त्री जाति के परमाणु ही ऐसे हैं कि सामने वाले के भाव बदल ही जाते हैं। यह तो, जब हम (दादाश्री) हाथ रखते हैं तब उसे अगर विचार आया हो तो भी वह बदल जाता है, उसके ऐसे खराब विचार गायब हो जाते हैं!

विषय की योजना के अलावा बाकी सभी योजनाओं के समय अगर तोड़-फोड़ करे तो चला लेंगे क्योंकि बाकी सभी मिश्रचेतन के साथ की योजनाएँ नहीं है, जबकि यह विषय की योजना तो मिश्रचेतन के साथ की योजना है। आप छोड़ दें, फिर भी सामने वाला दावा करें तो क्या होगा? इसलिए यहाँ सावधान रहने को कहा है। बाकी चीज़ों में असावधान रहे तो चलेगा। असावधान रहने का फल यह कि जागृति ज़रा कम रहेगी। लेकिन यह विषय तो सब से बड़ा ज़ोखिम है, सामने वाला जिस स्थान पर जाने वाला हो, उसी स्थान पर आपको ले जाएगा! अपने ज्ञान के साथ अब उस स्थान पर आपको कैसे पुसाएगा? एक तरफ जागृति और दूसरी तरफ यह बंधन, वह कैसे पुसाएगा? लेकिन फिर भी हिसाब चुकाना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : वह रूपक में तो आएगा न?

दादाश्री : हाँ, वह कैसा रूपक में आएगा कि वह स्त्री दूसरे जन्म में आपकी मदर बनेगी, वाइफ बनेगी, यदि विषय संबंधित उसके बारे में सिर्फ एक ही घंटे तक ध्यान करें तो! ऐसा है यह! सिर्फ इसी में आपको सावधान रहने जैसा है, बाकी किसी में सावधान रहने को नहीं कहते।

(सूत्र-12)

पुरुष को स्त्री का असंतोष रहता है और स्त्री को पुरुष का असंतोष रहता है इसलिए फिर चित्त वहीं चिपकता है।

किसी पुरुष को स्त्रियों के सामने नहीं देखते रहना चाहिए और किसी स्त्री को पुरुष के सामने नहीं देखते रहना चाहिए। जो खुद का है, उसी की छूट है। हलवाई की दुकान में लोग देखते नहीं रहते। क्योंकि वे जानते है कि हमारी नहीं है। लेकिन ये पुरुष, स्त्रियों को देखते रहते हैं और स्त्रियाँ, पुरुषों को देखती रहती हैं। अरे, इसमें देखने का है क्या? ये तो तरबूज जा रहे हैं सभी। इनमें क्या देखना है?

ऐसा कोई नहीं बताता! सब चलने दो, ऐसा ही कहते रहते हैं न! लेकिन यह तो भयंकर ज़ोखिम है। खुद के हक का भोगो। खुद की परिणीता स्त्री हो, तो उस स्त्री के माता-पिता शादी करवाते हैं और गाँव वाले भी शामिल होते हैं, यानी सभी लोग 'एक्सेप्ट' (स्वीकार) करते हैं न! उस हक में एतराज़ नहीं है, लेकिन बाकी कुछ तो देखना ही नहीं चाहिए। अन्यत्र कहीं-भी दृष्टि नहीं बिगाड़नी चाहिए। लेकिन ऐसा उपदेश किसी ने नहीं दिया। ऐसी ही पोल चलने दी, इसलिए गाड़ी उल्टी चली।

यह तो जगत् है, कहाँ-कहाँ दृष्टि नहीं बिगड़ेगी? इतना 'कंट्रोल' कैसे हो सकेगा? यह ज्ञान लिया हो तो 'कंट्रोल' रख सकता है। बाकी, *अणहक्क* का भोगने का विचार आए, तभी से जानवर गति में जाता है। लोगों के मन में ऐसा होता है कि मेरा क्या हो सकता है! इसलिए लोग भय नहीं रखते। लेकिन यह जगत् तो पूरा भय का ही कारखाना है। इसलिए सावधान रहकर चलना। भयंकर कलियुग है। दिनोंदिन 'डाउन' (उतरता) काल आता जा रहा है। विचार आदि

सब बिगड़ते ही जाएँगे। अत: मोक्ष में जाने की बात करोगे, तो शायद कुछ हो सकेगा!

जिसे देखने में असंतोष हो, वह यहाँ-वहाँ नज़र घुमाता रहता है। पुरुष को स्त्री का असंतोष रहता है और स्त्री को पुरुष का असंतोष रहता है इसलिए फिर चित्त वहीं चिपकता है। इसे भगवान ने 'मोह' कहा है। देखते ही चिपक जाता है। स्त्री देखी कि चित्त चिपक जाता है। ये लोग क्या सीधे रहते होंगे? यह तो कहीं पर भी सुख नहीं मिलता इसलिए व्यर्थ प्रयत्न में लगे रहते हैं। शायद ही कोई पुण्यशाली होगा, जो व्यर्थ प्रयत्न में नहीं लगा हो, तब फिर वह लोभ में पड़ा होता है।

स्त्री को पुरुष की भूख हो, तो स्त्री का चित्त पुरुष में चिपक जाता है। स्त्री की भूख हो, तो स्त्री को देखते ही पुरुष का चित्त स्त्री में चिपक जाता है। इस तरह नज़र लगने से बिगड़ा है सब।

मोक्ष जाने में कुछ बाधक हो तो वह सिर्फ स्त्री विषय ही है और वह भी देखने मात्र से ही बहुत बाधक है। व्यवहार में इतना ही भय है, इतना ही भय सिग्नल है। अन्य कहीं पर भय सिग्नल नहीं है। इसलिए लड़कों को कह रखा है न, कि स्त्री की तरफ देखना भी मत और देख लो तो उसका उपाय दिया है। साबुन लगाकर धो देना। इस काल में सब से बड़ा पोइज़न (ज़हर) हो तो वह विषय ही है। इस काल के मनुष्य ऐसे नहीं हैं कि जिन्हें ज़हर नहीं चढ़े। ये तो कमज़ोर हैं बेचारे! जैसा मनचाहे वैसे कहीं भी घूमेंगे तो ज़हर चढ़ेगा या नहीं? यह तो आज्ञा में रहते हैं इसलिए ज़हर नहीं चढ़ता लेकिन अगर आज्ञा में नहीं रहें तो? एक ही बार आज्ञा टूटी कि पोइज़न फैल जाएगा, तेज़ी से! इनकी बिसात ही नहीं न!

(सूत्र-13)

स्त्री को पुरुष से और पुरुष को स्त्री से, बिल्कुल *लप्पन-छप्पन* (अनावश्यक व्यवहार) नहीं करनी चाहिए, वर्ना वह भयंकर रोग है! यहाँ तो चेतन मिश्रित हुआ न! यानी स्त्री-पुरुष दोनों को सावधान रहने जैसा है, भयंकर ज़ोखिम है!

स्त्री-पुरुषों में इस कलियुग की वजह से आमने-सामने असर होता है। दोनों को संतोष हो, फिर भी बाहर कुछ देखें, तो दृष्टि गड़ जाती है। वह सबसे बड़ा भय सिग्नल है। इस दृष्टि में मिठास बर्ते, वह भी बहुत बड़ा ज़ोखिम है। आप मानी हों और आपको कोई स्त्री मान दें तो आपकी दृष्टि खींच जाएगी, लोभी हो और उसे लोभ दें तो भी दृष्टि खींच जाती है। फिर पूरा जीवन मटियामेट कर देता है!

अत: सावधान कहाँ रहना है कि स्त्री को पुरुष से और पुरुष को स्त्री से, बिल्कुल *लप्पन-छप्पन* नहीं करनी चाहिए, वर्ना वह भयंकर रोग है! उस विचार से ही मनुष्य को मूर्छा रहती है, तो फिर आत्मा की जागृति कब होगी? यानी इतना सावधान रहना है! क्या इसमें कुछ मुश्किल है?

प्रश्नकर्ता : वहाँ सावधान रहना चाहिए।

दादाश्री : इतनी सी चीज़ से ही दूर रहने जैसा है। अन्य सभी चीज़ें हम छुड़वा देते हैं, रास्ता निकाल देते हैं, लेकिन यहाँ तो चेतन मिश्रित हुआ न! यानी स्त्री-पुरुष दोनों को सावधान रहने जैसा है, भयंकर ज़ोखिम है! हमेशा नीचे ही देखना, हमारे मार्ग में अन्य कोई रोक नहीं है। घर में भी यही बातचीत करते रहना ताकि घर के सब लोग समझ जाएँ कि दृष्टि ऊपर उठाने जैसी है ही नहीं।

'वैराइटीज़ ऑफ पैकिंग्स' (विभिन्न प्रकार के खोखे) हैं! इनका अंत आए, ऐसा नहीं है, लेकिन इतनी अधिक जागृति भी नहीं रह पाती। इसलिए तय ही कर लेना कि जो होना हो वह

हो, लेकिन दृष्टि गड़ानी ही नहीं है। वर्ना बीज तो बहुत बड़े डल जाएँगे, वे अगला जन्म खत्म कर देंगे! वह जहाँ जाएगी, वहाँ इसे भी जाना पड़ेगा और फिर खत्म हो जाएगा।

(सूत्र-14)

पूरे जगत् की माया यहीं भरी पड़ी है। स्त्रियों की माया पुरुषों में है और पुरुषों की माया स्त्रियों में है।

विषय यदि मजबूरन भोगना पड़े तो वह विष नहीं है। तू पैसे खुलकर खर्च करता है या मजबूरन? यह तो सिर्फ पैसों की ही बात है। लेकिन एक ही बार के विषय में तो कितने ही अरबों का नुकसान है, भयंकर हिंसा है। पैसों की इतनी क़ीमत नहीं है, पैसा तो फिर से आ जाएगा। ये सारे हिसाब भुगतने पड़ेंगे। जितने हिसाब बाँधने हों, उतने बाँधना। जितनी ताकत हो, उतने हिसाब बाँधना, बाकी भुगतते समय सहन नहीं हो और चीखे-चिल्लाए। उसके बजाय पहले से ही सावधान रहकर हिसाब बाँधना। वे सारे हिसाब चुकाने तो पड़ेंगे न? विषय की वेदना से तो नर्क की वेदना अच्छी। यह विषय तो वापस बीज डालता है। नर्क में बीज नहीं डलते, नर्क में सिर्फ भुगतना ही होता है, डेबिट चुकता हो जाता है। और क्रेडिट हो तो वहाँ देवगति में पूरा होता है। जबकि विषय में तो नये बीज पड़े बगैर रहते ही नहीं। ऐसे विचार तो हमें बचपन से ही आते थे, बहुत सोच चुके हैं हम।

'गणे काष्ठनी पूतळी, ते भगवान समान'। अब काष्ठ की पुतळी कैसे माने? ऐसा मानना कोई आसान बात है? ये लोग तो, सचमुच ही काष्ठ की पुतली लाकर दे दें फिर भी उसे आलिंगन करते रहें, ऐसे हैं! माने काष्ट की पुतली, यह माना जा सके, ऐसा नहीं है। वह तो समझपूर्वक देखने पर ही समझ में आ सकता है। लेकिन जिन्हें यह काष्ट की पुतली दिखाई देती है, वह पुरुष तो कैसा होता है कि उसे यों आरपार दिखाई देता है। पहने हुए कपड़ो में कपड़े के अंदर चमड़ी और चमड़ी के अंदर क्या-क्या हैं, वह सब यों ही दिखता रहता है। फिर मोह हो ही नहीं सकता न! यह मोह ही सारा गलत है न!

अब यहाँ देखे और वैराग्य आए, वह तो भगवान ही कहलाएगा! हड्डियाँ, माँस और खून से भरी हुई यह देह, इसके जैसी जगत् में कोई गंदगी नहीं है। जब इसी देह से मोक्ष का काम निकाल लें तो उसके जैसा उत्तम और कुछ भी नहीं है! मनुष्य देह है, इससे जिस तरह का काम निकालना हो, वैसा हो सकता है।

ब्रह्मचर्य से तो मन को संस्कारी बनाना है और ज्ञान समझना है कि कहीं पर भी आकर्षण नहीं हो। मुझे ये स्त्री-पुरुष कैसे दिखाई देते हैं? पहले बिल्कुल नंगे दिखाई देते हैं, फिर चमड़ी निकाल दी गई हो, ऐसे दिखाई देते हैं। इससे फिर वैराग्य ही रहेगा न! वैराग्य वह कहीं मारने-पीटने से नहीं आता, वह तो ज्ञान से आता है।

प्रश्नकर्ता : यह तो बहुत गूढ़ है।

दादाश्री : इसे समझने बैठें तो बहुत गहन है, फिर भी आसान है। कहीं पर भी विरोधाभास उत्पन्न नहीं होता। यह सैद्धांतिक ज्ञान है और सबल अनुभवजन्य ज्ञान है। अपना तो यह अक्रम मार्ग है, इसलिए हमने खाने-पीने की छूट दी है, हर प्रकार से छूट दी है, लेकिन हम विषय के सामने सावधानी रखने को कहते हैं! बाकी, विषय से तो भगवान भी डरते थे। अपने यहाँ तो सिनेमा की भी छूट दी है। क्योंकि सिनेमा में ऐसा तन्मयाकार नहीं होता, जबकि विषय में तो अत्यधिक तन्मयाकार हो जाता है। मनुष्य का

स्वभाव हरहाया है। हरहाया यानी जहाँ देखा वहाँ मुँह डाला, जहाँ देखा वहाँ मुँह डाला। बाकी सभी चीज़ों में रूप देखना है, इसमें रूप है ही कहाँ, कि उसे देखें? ये तो ऊपर से ही सुंदर दिखते हैं। आम तो अंदर से कच्चा हो, फिर भी स्वादिष्ट लगता है और दुर्गंध भी नहीं आती जबकि इसे काटें तो? दुर्गंध का अंत ही नहीं है!

अत: यह यहीं पर माया है। पूरे जगत् की माया यहीं पर भरी हुई है। स्त्रियों की माया पुरुषों में है और पुरुषों की माया स्त्रियों में है।

प्रश्नकर्ता : इसी कारण सब अटका हुआ है न?

दादाश्री : हाँ, इसी कारण अटका हुआ है।

आपके पास तो ज्ञान है, ज्ञान हाज़िर रहेगा तो बीज डलने बंद हो जाएँगे, फिर भी प्रतिक्रमण करने पर ही निबेड़ा आएगा। शुद्धात्मा देखकर, जो चित्त पर चिपका था उसे धो देना। वर्ना यदि चित्त चिपके तो उसका फल दो-पाँच हज़ार सालों बाद भी आ सकता है!

(सूत्र-15)

स्त्री-पुरुषों को एक-दूसरे को छूना नहीं चाहिए, बहुत ज़ोखिम है। जब तक पूर्ण नहीं हुए हैं तब तक नहीं छू सकते। वर्ना एक भी परमाणु विषय का भीतर प्रवेश कर जाए तो कितने ही जन्म बिगाड़ देगा।

हम अखंड ब्रह्मचारी हैं। जिन्हें ज्ञान होने के बाद अट्ठाईस साल से आज तक कभी भी स्त्री का विचार ही नहीं आया। इसलिए हम स्त्रियों को छू सकते हैं, वर्ना स्त्री को छूआ नहीं जा सकता।

स्त्री-पुरुषों को एक-दूसरे को छूना नहीं चाहिए, बहुत ज़ोखिम है। जब तक पूर्ण नहीं हुए हैं तब तक नहीं छू सकते, वर्ना एक भी परमाणु विषय का भीतर प्रवेश कर गया तो कितने ही जन्म बिगाड़ देगा। हम में तो विषय का एक भी परमाणु नहीं है। एक भी परमाणु बिगड़े तो तुरंत ही प्रतिक्रमण करना होगा। प्रतिक्रमण करने से सामने वाले में भाव उत्पन्न नहीं होता।

स्त्री को छूने का अधिकार किसी को भी नहीं है क्योंकि स्त्री को छूए तो परमाणु का असर हुए बगैर रहेगा नहीं। परस्त्री को ज़रा सा भी छू लिया हो, तो घंटे भर धोना पड़ता है। सिर्फ 'ज्ञानी पुरुष' के ही चरणों को छूकर स्त्रियाँ विधि कर सकती हैं। 'ज्ञानी पुरुष' तो विषय के सारे बीज उखाड़कर फेंक चुके होते हैं। उनमें विषय का बीज ही नहीं होता। छूने का अधिकार किसे है? नौवाँ गुणस्थानक पार कर लिया हो उसे क्योंकि उन्हें तो विषय संबंधी विचार तक नहीं आते न! वे विचार ही बंद न! ऐसा होने के बाद तो उनके दिमाग़ में सारे ऊर्ध्व विचार ही आते हैं, सारी शक्तियों का ऊर्ध्वीकरण ही होता है।

यह ज्ञान होने के बाद हमें कभी-भी विषय का विचार नहीं आया। विषय का विचार नहीं आया हो, जिनका मनोबल ज़बरदस्त ज्ञानपूर्वक हो गया हो, फिर उन्हें कोई हर्ज नहीं है। इसलिए स्त्रियाँ हमारे चरणों को छूकर विधि कर सकती हैं न! लेकिन अन्य किसी को भी स्त्रियों को छूने की छूट नहीं है और स्त्रियों को भी किसी को छूने की छूट नहीं है, छू ही नहीं सकते। अन्यों को तो स्त्री के छूने से पहले ही विषय का विचार खड़ा हो जाता है। हमें तो 'थ्री विज़न' से एक ही सेकन्ड में सब आरपार दिखाई देता है। हमारा दर्शन इतना उच्च है, फिर रोग उत्पन्न ही कैसे हो सकता है?

और हमें *पुद्गल* के प्रति राग ही नहीं है न! मेरे ही इस *पुद्गल* के प्रति मुझे राग नहीं है। *पुद्गल* से मैं सर्वथा जुदा ही रहता हूँ। खुद के *पुद्गल* के प्रति जिसे राग होता है, उसे दूसरों

के *पुद्गल* के प्रति राग होता है। अनंत जन्मों से यही का यही भोगा है फिर भी नहीं छूटता, यह आश्चर्य ही है न! कितने ही जन्मों से विषय सुख का विरोधी हो चुका हो, विषय सुख के बारे में आवरण रहित दृष्टि से बहुत ही सोचा हो, ज़बरदस्त वैराग्य उत्पन्न हो चुका हो, तब यह विषय छूट सकता है। वैराग्य कब उत्पन्न होता है? उसे अंदर जैसा है वैसा दिखाई दे, तब।

सिर्फ स्पर्श से ही यह बंधन रहा है। इस जगत् का बंधन ही (स्त्री) स्पर्श से हुआ है और (ज्ञानी के) स्पर्श से ही छूटता है लेकिन जो छूट चुके हैं उनके (ज्ञानी के) स्पर्श से आप छूट सकते हैं और बंधे हुए के (स्त्री-पुरष के) स्पर्श से आप बंध जाते हैं।

(सूत्र-16)

सीलबंद पेट्रोल के डिब्बे हों, जिनमें से हवा तक न निकल पाए ऐसे हों, उसके बावजूद भी उस रूम में कोई बीड़ी पीए, तब भी डिब्बे जल उठते हैं। अतः स्त्री-पुरुषों को 'बिवेर ऑफ पेट्रोल' ऐसा बोर्ड लगाना चाहिए।

अनंत जन्मों से दर्शन मोह के कारण यह संसार जंजाल खड़ा हो गया है, जब सम्यक् दर्शन होता है, तब दर्शन मोह टूटता है। जगत् क्यों खड़ा है? दर्शन मोह से। इतना कुछ करने के बावजूद भी क्यों मुक्ति प्राप्त नहीं कर पाते? दर्शन मोह बाधक है। किसी व्यक्ति ने रात को खाना खाया, लेकिन सवेरे फिर से ज़ोरदार भूख लगे, तो वह सुनार की दुकान या साड़ी की दुकान नहीं देखता। लेकिन उसे तो हलवाई की दुकान ही दिखाई देती है। ऐसा क्यों? उसका चित्त खाने के लिए ही भटकता रहता है? देह में जब भूख का 'इफेक्ट' (असर) होने लगे, तब खाने का मोह होता रहता है, उसको दर्शन मोह कहते हैं। देह को विषय की भूख लगे तो स्त्री के प्रति मोह जागता है। इस तरह इस दर्शन मोह से तो अगले जन्म के बीज डालता है। इससे अगले जन्म का संसार खड़ा करता है। वीतराग को किसी की नज़र नहीं लगती। अतः यदि संसार से छूटना हो तो वीतराग बन। लेकिन वीतराग कैसे बन सकते हैं? दर्शन मोह टूटे, ऐसा कोई उपाय कर! दर्शन मोह से संसार खड़ा है।

आपने कहीं अच्छी भिंडियाँ देखीं, तो आपकी आँखें वहीं चिपक जाती हैं। कुछ अच्छा देखें, वहीं नज़र चिपक जाती है। नज़र चिपकी कि संसार खड़ा हो गया। यह जगत् खुली आँखों से देखने जैसा है ही नहीं। उसमें भी कलियुग में तो भयंकर असर होता है। इन आँखों से तो पूरा संसार खड़ा हो जाता है।

इस जगत् में तो सभी चीज़ें ऐसी ही हैं न कि जो भ्रमित करें? जहाँ मन ही कच्चा है, वहाँ क्या हो सकता है? इसमें देखने जैसा है ही क्या? यह तो देखने की बुरी आदत है। जो दिखाई देता है, उसके प्रति मोह होता है। मनुष्य को इन सभी पर्यायों का ज्ञान है नहीं! खाने के बाद उल्टी हो जाए तो जो उल्टी हुई, वह तो जो खाया था उसीका हिस्सा है, ऐसा एट-ए-टाइम लक्ष्य में नहीं रहता न! जैसे कि ये आम होते हैं, उनमें मंजर आते हैं, फिर फल लगते हैं, छोटे-छोटे आम आते हैं, वे कसैले लगते हैं, फिर खट्टे होते जाते हैं, उसके बाद मीठे होते हैं, वे ही फिर सड़ जाते हैं, बिगड़ जाते है, बदबू मारते हैं। ये सारे पर्याय एट-ए-टाइम हाज़िर रहें तो फिर आम के प्रति मोह ही नहीं होगा न! खाने लायक, देखने लायक तो सत्युग में था। आज की स्त्रियाँ देखने लायक नहीं होती, पुरुष देखने योग्य नहीं होते। ये तो बिगड़े हुए आम जैसे दिखते हैं। अरे! इस बिगड़े हुए माल में देखने जैसा क्या लगता है

तुझे? स्त्री, वह पुरुष का संडास है और पुरुष, वह स्त्री का संडास है।

जिन्हें मोक्ष में जाना है, उन्हें स्त्री जाति को या स्त्री को पुरुष जाति को दृष्टि गड़ाकर देखना ही बंद कर देना चाहिए, वर्ना इसका निबेड़ा ही नहीं आएगा। यह चमड़ी निकाल दी जाए तो क्या दिखाई देगा? लेकिन ये लोग तो यों भी इतनी बदबू मारते हैं कि ऐसा होता है कि ये कैसे लोग हैं! पहले के समय में ऐसी स्त्रियाँ होती थीं, पद्मिनी-स्त्रियाँ, जिनकी सुगंध आती थी, कुछ दूरी पर बैठी हो फिर भी यहाँ तक सुगंध आती थी। आजकल तो पुरुषों में बरकत ही नहीं है और स्त्रियों में भी बरकत नहीं है। सारा फेंक देने जैसा माल, निकाल देने जैसा माल है, रबिश मटिरियल्स (कचरा माल)। उसके प्रति फिर मोह करता है। अरे, इसमें मोह करने जैसा क्या लगा तुझे? क्यों, गोरी चमड़ी है, इसलिए? सीलबंद पेट्रोल के डिब्बे हों, जिनमें से हवा तक न निकल पाए ऐसे हों, उसके बावजूद उस रूम में कोई बीड़ी पीए, तब भी डिब्बे जल उठेंगे। अत: स्त्री-पुरुषों को 'बिवेर ऑफ पेट्रोल' ऐसा बोर्ड लगाना चाहिए।

(सूत्र-17)

शास्त्रकारों ने कहा है, कि पेट्रोल और अग्नि इन दोनों को साथ में नहीं रखने चाहिए। फिर भी, हमारे यहाँ साथ रहते हैं। तो इतना सावधान रहकर चलना है कि दियासलाई नहीं गिरनी चाहिए।

पहले तो लोगों की दृष्टि एकाध जगह ही बिगड़ती थी। आज तो जगह-जगह दृष्टि बिगड़ती है! इसलिए फिर हिसाब चुकाने जाना ही पड़ेगा। यानी वह जहाँ जाए, हल्की जाति में जाए तो आपको भी हलकी जाति में जाना पड़ेगा। और कोई चारा ही नहीं। हिसाब चुकाना ही पड़ेगा। अब इन बेचारों को इसका पता ही नहीं है न, कि इसकी ज़िम्मेदारी क्या है? आप समझते हो कि ये लोग ऐसा कर रहे हैं? तो आप भी वैसा ही करते हो। बिच्छू यदि डंक मारे तो तुरंत ही क्यों दूर हो जाते हो? 'इसमें डंक मारने वाला है' ऐसा कोई दिखाने वाला नहीं है न?

नीची जाति में ऊँचे पुरुषों को क्यों जन्म लेना पड़ता है? विषय-विकार के रोग जिन्हें लगे हैं, वे सभी नीची जाति में जन्म पाते हैं, इसी एक आधार पर। जिन में विषय-विकार कम होते हैं, वे उच्च जाति में, उच्च कुल में और उच्च गौत्र में होते हैं। विषयदोष कम हैं, इसलिए! केवल दृष्टि में बदलाव होने से, वह जहाँ जाए वहाँ जाना पड़ता है। इसलिए सावधान रहना है। अपनी पत्नी के अलावा और कहीं दृष्टि बिगड़नी ही नहीं चाहिए। और कहीं दृष्टि बिगड़ी तो खत्म हो जाएगा। मैं क्या कहता हूँ कि अन्य किसी स्त्री को मत देखना, कुदरती तौर पर तेरे हिस्से में जो आई है, उसे तू भोग। किसी अन्य की स्त्री पर नज़र बिगाड़े तो वह चोरी करने के बराबर है। आपकी स्त्री पर कोई नज़र बिगाड़े तो आपको अच्छा लगेगा क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : उसी प्रकार आपको भी नियम से रहना चाहिए। कितनी भी खूबसूरत हो फिर भी, किसी लड़की की ओर नज़र नहीं जाए, इतना सँभालने को कहा है।

प्रश्नकर्ता : पवित्र रहना है।

दादाश्री : हाँ, पवित्र रहना है। पवित्र रहने के बावजूद भी कहीं आँखें खिंच जाए और कहीं ज़रा भूल हो जाए तो हमने साबुन दिया है, उससे तुरंत दाग़ धो डालना। तुरंत नहीं धोओगे तो कपड़ा मैला

होता रहेगा। इन लड़कों की बेचारों की दृष्टि बिगड़ जाती है। आपको, बड़ी उम्र वालों को भी साबुन देना पड़ता है क्योंकि यह दृष्टि तो कब बिगड़ेगी, वह कहा नहीं जा सकता। हमने आपको स्त्री के साथ रहते हुए भी यह मोक्ष दिया है। आपसे मैं कहूँ कि पत्नी को छोड़कर यहाँ आ जाओ और उनके मन में दु:ख हुआ, तो फिर क्या आप कभी मोक्ष में जा सकोगे? और मैं आपको बुलाऊँ तो मैं भी मोक्ष में जा सकूँगा क्या? आप दोनों को भटका दिया, उसमें क्या मेरा भी मोक्ष हो सकेगा?

परेशानी केवल स्त्री-पुरुष दोनों आमने-सामने मिलते हैं, वहाँ पर मूल दृष्टि का रोग है। दृष्टि बिगड़ जाए तो प्रतिक्रमण कर लेना। बस, इतनी ही परेशानी है! दूसरी कोई परेशानी नहीं है। क्योंकि शास्त्रकारों ने कहा है, जगत् ने कहा है कि पेट्रोल और अग्नि इन दोनों को साथ में नहीं रखने चाहिए। फिर भी, हमारे यहाँ साथ रहते हैं तो इतना सावधान रहकर चलना है कि दियासलाई नहीं गिरनी चाहिए।

यहाँ इन स्त्रियों को, पुरुषों को हर एक को प्रतिक्रमण का साधन दिया है। दृष्टि बिगड़ी कि तुरंत ही प्रतिक्रमण कर लेना, फिर ज़ोखिमदारी मेरी। क्योंकि आपने प्रतिक्रमण किया, मेरी आज्ञा का पालन किया इसलिए सब ज़ोखिमदारी मेरी। फिर आपको क्या चाहिए? ज़ोखिमदारी दादा ले लें तो, फिर क्या परेशानी है?

अपने ज्ञान के कारण बाहर तो दृष्टि गड़ती ही नहीं और बैठे तो उखाड़कर फिर प्रतिक्रमण कर लेता है। पहले का माल भरा है इसलिए गड़ती ज़रूर है, लेकिन उखाड़कर प्रतिक्रमण कर लेता है।

प्रश्नकर्ता : दृष्टि नहीं बिगड़े और मन साफ रहे, उसके लिए तो कितनी अधिक जागृति रखनी पड़ेगी?

दादाश्री : ओहोहो, उसकी जागृति नहीं रखें, तब फिर और करना क्या है? वे फाइलें तो अगले जन्म में भी फिर से चिपकेंगी। पिछले जन्म से चिपकी हुई हैं, उन्हें इस ज्ञान से उखाड़ फेंक देना है। नई नहीं चिपके, वही देखना है न!

(सूत्र-18)

मिश्रचेतन के प्रति हुए एक-एक दोष को याद करके, एक-एक दोष को ढूँढकर आलोचना-प्रतिक्रमण व प्रत्याख्यान करना। ज्ञानी पुरुष की आज्ञा में रहने से दोषों के ओपरेशन होते जाते हैं।

बचपन से लेकर अभी तक जिस-जिसके साथ विषय-विकार के संबंधित जो-जो दोष किए हैं, उन दोषों को याद करके और भगवान महावीर की साक्षी में या श्री सीमंधर स्वामी को नमस्कार करता हूँ, ऐसा बोलकर माफी माँगना, एक सामायिक करना, इतना करना, हो पाएगा इतना?

प्रश्नकर्ता : हो पाएगा। जितने याद आएँगे, उन सभी के (प्रतिक्रमण) कर दूँगा।

दादाश्री : याद आए तब तक सब कुछ करना। जिसकी इच्छा है, जो सरल है, उसे याद आए बगैर नहीं रहेगा और भगवान के मार्ग में सरलता, वही मोक्ष का सरल रास्ता है, उत्तम रास्ता है। सरल नहीं हुआ तो भगवान के मार्ग में है ही नहीं।

सब से पहले दादा का ध्यान लगाकर, स्मरण करके, एकाध पद पढ़कर और फिर त्रिमंत्र बोलकर, फिर 'मैं शुद्धात्मा हूँ' की स्थिरता कर लेना, फिर आज से लेकर बचपन तक की जो-जो घटनाएँ हुई हों, विषय-विकारी (दोष) किए हों, वे सब जितने आपको दिखाई दें, उन सभी के प्रतिक्रमण करने की आप शुरुआत करना। आज से पीछे की ओर चलना है, कल किसके साथ

क्या किया था, परसों किसके साथ किया था, नरसों किसके साथ किया था या बचपन से याद करना। जितना भी याद आए न, उनके प्रतिक्रमण करने हैं। वह याद आएगा, कुदरती रूप से ही याद आएगा। आपको ऐसा घबरा नहीं जाना है कि याद नहीं आए तो क्या करेंगे? आप शुरू करोगे कि मूसलाधार बरसात होगी! रेगिस्तान में भी बरसात होगी! और फिर जहाँ पर हिंसा जैसे दोष किए होंगे, अगर तो वाणी से हिंसा की होगी, या फिर कपट किए होंगे, कुछ लोभ किया होगा, मान किया होगा, धर्म में विराधना की होगी तो उन सब का प्रतिक्रमण करते-करते आगे जाना है। फिर अब्रह्मचर्य से संबंधित, *अणहक्क* (बिना हक़ का) के भोग भोगे हों या वैसा सोचा भी हो, उन सब को भी याद करके धोते रहना। जगत् जिसकी निंदा करे, जो नींदनीय हों उसके फलस्वरूप नर्क के अधिकारी बन जाते हैं! अत: उन सब का प्रतिक्रमण कर देना।

प्रश्नकर्ता : गलतियाँ पता नहीं चलें तो?

दादाश्री : तो दादा को याद करके कहना, 'हे दादा भगवान, अब याद नहीं आ रहा है।' तो वापस याद आने लगेगा और जितने दोष दिखाई दिए उतने दोष खत्म हो जाएँगे। अब सुख खुद के भीतर शुरू हो गया है, लेकिन पहले के मिश्रचेतन के साथ के जो हिसाब बाकी होंगे, वे दावा करेंगे। ऐसे मार खाकर सीधा होने के बजाय मिश्रचेतन के प्रति हुए दोषों के लिए माफी ही माँगते रहो तो हल्के हो जाओगे। बच्चों के प्रति, पत्नी के प्रति, फादर-मदर वगैरह, वे सब मिश्रचेतन ही कहलाते हैं। उन सब के प्रतिक्रमण करने हैं। आज्ञा के पीछे ज्ञानी पुरुष का वचनबल काम करता है इसलिए काम निकल जाता है।

अब अभी से देखते-देखते अंत में छोटी उम्र तक अंदर देखते रहो। देखते-देखते इस साल से पिछले साल में, उससे पिछले साल में ऐसा करते-करते सब दिखेगा, अंत तक का। बचपन से लेकर अभी तक का देखना या फिर अभी से लेकर बचपन तक का देखना। किसी भी एक अभ्यास में लग जाना। आत्मा द्वारा देखना भीतर, अटक जाए तो भी देखते रहना। तो दिखता जाएगा आगे। कई बार अंतराय नहीं होते हैं और किसी को हों तो अटक जाता है जिसके अंतराय कम होंगे उसे सब दिखता जाएगा। बचपन तक का सब दिखाई देगा, जो कुछ किया था, वह सब।

यह चेतन वाणी है। यह चेतन वाणी ही काम करेगी। बैठकर शुद्धतापूर्वक प्रतिक्रमण शुरू कर दो। पाँच महाव्रत हैं, उन महाव्रतों का कहाँ-कहाँ भंग हुआ, उन्हीं का करना है, और कुछ नहीं करना है। बाकी, घूमे हों, फिरे हों, पान खाया हो, उनका नहीं करना है। मनुष्य से मनुष्य के प्रति आमने-सामने जो दोष हुए हों, उनके प्रतिक्रमण करने हैं। यानी मिश्रचेतन के प्रति जो दोष हुए हों, उन दोषों के लिए प्रतिक्रमण करने को कहता हूँ। यह 'दादा' की आज्ञा हुई है, उसका पालन करना। ऐसे तो रोज़ प्रतिक्रमण करते रहते हैं। किसी मिश्रचेतन के प्रति विषय का विचार आया हो, कोई दोष किए हों, उन सभी का बचपन से लेकर अभी तक का याद कर-करके प्रतिक्रमण करना है। यह प्रतिक्रमण आज्ञासहित है इसलिए सब धुल जाएगा। मनुष्य से कौन सा आचार नहीं हो सकता? लेकिन आज्ञा का पालन किया तो स्वच्छ हो जाएगा।

मिश्रचेतन के प्रति हुए ऐसे एक-एक दोष को याद करके, एक-एक दोष को ढूँढकर आलोचना-प्रतिक्रमण व प्रत्याख्यान करना। ज्ञानी पुरुष की आज्ञा में रहने से दोषों के ओपरेशन होते जाते हैं। यह तो 'लिफ्ट' मार्ग है। रास्ते चलते यह मार्ग मिल गया है न! अत: इस तरह

से आज्ञा में रहने से माल स्वच्छ होता जाएगा। ऐसा करते-करते मोक्ष में जा पाओगे।

(सूत्र-19)

हमारी गारन्टी है, यदि हमारे इस 'ज्ञान' (इन आज्ञाओं) का पालन करोगे तो एकावतार की गारन्टी है! लेकिन विषय तो होना ही नहीं चाहिए।

चौबीसों तीर्थंकरों ने कहा है 'एकांत शैय्यासन!' ऐसा क्यों कहा? दो प्रकृतियाँ इकट्ठी हुई तो वह शैय्यासन के लिए किसी काम का नहीं है। क्योंकि दो प्रकृतियाँ, पूर्ण रूप से एकाकार या 'एडजस्टेबल' नहीं हो सकती इसलिए 'डिस्एडजस्ट' होती रहेंगी और उससे संसार खड़ा होता रहेगा। इसलिए भगवान ने खोज की थी कि एकांत शैय्या और आसन।

दो लोग कभी भी एक नहीं हो सकते। चाहे कितना भी करें तो भी एक होते हैं क्या? जब अलग होते हैं तो फिर दो नहीं रहते? फिर 'मैं' और 'तू' करते रहते हैं न? 'मैं ही हूँ, मैं ही हूँ' ऐसा नहीं करते? इसलिए 'ज्ञानी पुरुष' एकांत शैय्यासन खोजते हैं। कभी दो से एक हो जाएँगे, लेकिन हमेशा एक नहीं रहेंगे और फिर बखेड़ा होगा, उसके बजाय एक सिंगल बिछौना बिछा दो, ताकि झंझट ही मिट जाए! और यदि किसी को 'जेल' हुई हो, तो जेल की सज़ा तो पूरी करनी ही पड़ेगी न? पच्चीस साल की सज़ा हुई हो तो पच्चीस साल और चालीस साल की हो तो चालीस साल, पूरे तो करने ही पड़ेंगे न? लेकिन भावना कैसी रखनी चाहिए? एकांत शैय्यासन की! शैय्या और आसन एकांत, यह ज्ञानियों का पसंद किया हुआ मार्ग है कि दो में मज़ा नहीं है। दो से एक होते ज़रूर हैं, लेकिन फिर एक में से वापस दो हो ही जाते हैं। इसलिए जब तक यह साथ है, तब तक जेल समझना। जेल में और कोई चारा ही नहीं होता न! पुलिस वाला कहे वैसा करना पड़ता है। भगवान की (भाषा में) अहिंसा वाला कैसा होता है? एकांत शैय्यासन वाला होता है। भले ही सबके साथ उठे-बैठे, लेकिन शैय्यासन एकांत होता है।

एकांत शैय्यासुख गुण उत्पन्न होने के बाद ही सच्चा सुख उत्पन्न होता है। जब सामने वाले व्यक्ति को आरपार देखना आ जाए, तब एकांत शैय्यासुख नामक गुण उत्पन्न होता है। फिर उसे अकेले रहना और एकांत ही अधिक सुखकर लगता है। इसके बाद उसमें सच्ची मस्ती उत्पन्न होती है। भीतर सुख तो भरपूर पड़ा है, वह प्रकट होता है।

एकांत शैय्यासन। एक आसन और एक शैय्या हो जाएँ तब परम सुखी हो जाता है, जो कि कई सालों से हमारा रिवाज़ है और वीतरागी मस्ती का अनुभव कर रहे हैं। 'दादा' का यह पद आपको यदि एक ही घंटे के लिए मिल जाए तो सदा के लिए मेरे जैसे सुखी हो जाओगे। बाकी, स्त्री हो तब तक किसी को मोक्ष की आशा ही नहीं रखनी चाहिए। 'विषय है तब तक आत्मा को जाना ही नहीं है' ऐसा कहा जाता है। किसी की स्त्री के प्रति दृष्टि जाए तो उसने ज़रा सा भी, अंशमात्र भी आत्मा नहीं जाना है। उसने आत्मसुख का अनुभव ही नहीं किया है! वर्ना आत्मसुख तो कैसा होता है!

जब तक विषय रहे, तब तक आत्मा का स्पर्श हो ही नहीं सकता, कभी स्पर्श हो ही नहीं सकता। इतने में ही सावधान रहने को कहते हैं। इतना ही जीतना है, स्त्री विषय! स्त्री के प्रति दृष्टि हुई, उस तरफ का विचार भी आया कि खत्म हो गया। मोक्ष की नींव ही उखड़ गई। मोक्ष की इच्छा तो बहुत है, लेकिन मोक्ष का रास्ता नहीं मिल पाता। इसलिए अनंत जन्मों से भटकते ही रहे हैं और बिना अवलंबन के जी नहीं पाते।

इसलिए उसे स्त्री वगैरह, सभी कुछ चाहिए। शादी करता है, वह भी इसलिए कि आधार ढूँढता है। इसलिए शादी करता है न। मनुष्य निराधार रह ही नहीं सकता न! निरालंब नहीं रह सकता न! ज्ञानी पुरुष के अलावा अन्य कोई निरालंब रह ही नहीं सकता, कुछ न कुछ अवलंबन ढूँढता ही है!

(सूत्र-20)

रिसर्च तो, जो निर्विषयी हो, वही कर सकता है। विषयी व्यक्ति रिसर्च कर ही नहीं सकता।

बाकी, विषय भोग तो निरी जूठन ही है, पूरी दुनिया की जूठन है। आत्मा का कहीं ऐसा आहार होता होगा? आत्मा को बाहर की किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं है, निरालंब है। किसी भी अवलंबन की उसे ज़रूरत नहीं है। परमात्मा ही है खुद। निरालंब अनुभव में आ जाए तो परमात्मा ही हो गया! उसे कुछ भी नहीं छू सकता। दीवारों के आरपार निकल जाए, अंदर ऐसा आत्मा है, अनंत सुख का धाम है!

इस खोखे का हमें क्या करना है? खोखा तो कल को सड़ जाएगा, गिर जाएगा, गल जाएगा, खोखा तो किस चीज़ से बना है, वह हम नहीं जानते? फिर भी लोग भूल जाते हैं न? लोग भूल जाते होंगे? लेकिन यह खोखा आपको भी भ्रम में डाल देता है। हमें, ज्ञानी पुरुष को, यों आरपार दिखता है। कपड़े वगैरह हों फिर भी कपड़ों के अंदर, चमड़ी के अंदर जैसा है वैसा यथावत् दिखता है। फिर राग कैसे होगा? खुद सिर्फ आत्मा को ही देखते हैं और बाकी सब तो कचरा है, सड़ा हुआ माल है। उसमें देखने जैसा क्या है? वहीं पर राग होता है, वही आश्चर्य है न! खुद क्या यह नहीं जानता? जानता है सब कुछ, लेकिन उसे ऐसा समझाया नहीं गया है। ज्ञानियों ने पहले से ही माल देखा हुआ है। इसमें नया क्या है? फिर बीवी के साथ सो जाता है। अरे, इस मांस को ही दबाकर सो जाता है! लेकिन यह तो भान नहीं है न! उसी का नाम मोह है न! हमें निरंतर जागृति रहती है, एवरी (हर एक) सेकन्ड जागृति रहती है, इसलिए हम सब जानते हैं कि निरा मांस ही है यह सब!

अब ऐसी बात कोई करता नहीं है न! क्योंकि लोगों को विषय पसंद है। इसलिए यह बात करता ही नहीं है न कोई! जो निर्विषयी है, वही यह बात कर सकते हैं, वर्ना ऐसा खुल्लम खुल्ला कौन कहेगा? अंत में तो यह सब छोड़े बिना चारा ही नहीं है। आप हम से कहो कि मुझे ब्रह्मचर्यव्रत लेना है, तो हम 'हाँ' कहते हैं। क्यों, कि भई, बहुत अच्छा है यह, सुखी होने का सच्चा मार्ग यही है, यदि आपका उदय हो तो। वर्ना शादी कर लो। शादी करके अनुभव लो। एक बार अनुभव हो गया तो दूसरे जन्म में मुक्त हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : कोई-कोई मुक्त हो जाता है, नहीं तो छूटना मुश्किल है।

दादाश्री : उस अनुभव को याद रखे तो छूट सकता है। हम तो हर क्षण याद रखने वाले।

प्रश्नकर्ता : ऐसा तो शायद ही कोई याद रखने वाला होगा, नहीं तो कीचड़ में उतरता ही जाता है।

दादाश्री : हाँ, यह तो कीचड़ ही है, गहरा कीचड़ है। उसमें उतरता ही जाता है। रिसर्च (खोज़बीन) तो, जो निर्विषयी हो, वही कर सकता है। विषयी व्यक्ति रिसर्च कर ही नहीं सकता।

(सूत्र-21)

आत्मा का स्पष्ट अनुभव करना हो तो छः-बारह महीने विषय बंद रखना। ये सारे

अनुभव तो होते रहते हैं, लेकिन दोनों साथ रहे तो पता नहीं चलता कि 'सुगंधी' कहाँ से आ रही है?

सबसे बड़ी तकलीफ तो बाहर सभी जगह खराब दृष्टि रखने में है। दूसरा, उससे आगे इसमें क्या करना पड़ता है कि जैसे स्कूल में साल में डेढ़ महीने की छुट्टी होती है, उसी तरह इस विषय में यदि छः महीने की छुट्टी ले ले तो उसे पता चल जाता है कि यह सुख कहाँ से आ रहा है? अतः उसे यह सुख मिलता ज़रूर है, लेकिन कसौटी नहीं हो पाती कि इनमें से सच्चा सुख कौन सा है? हमें देखो न, चौबीसों घंटे रूम में अकेले बिठाकर रखें न, तब भी वही आनंद रहता है, साथ में कोई एकाध व्यक्ति हो तो भी वही आनंद रहता है और लाखों लोग हों तो भी वही आनंद रहता है। उसका क्या कारण है? हममें निरालंब सुख उत्पन्न होता है, अवलंबन नहीं चाहिए। पूरा जगत्, जीवमात्र परस्पर (एक-दूसरे से जुड़ा) है, इसलिए एक-दूसरे का अवलंबन चाहिए। इसलिए तो इन लोगों ने शादी की खोज़बीन की थी कि शादी करो, ताकि पारस्परिक अवलंबन मिलता रहे!

'मैं शुद्धात्मा हूँ', यह शब्द का अवलंबन है! लेकिन वह प्रवेश के लिए हरी झंडी है! जबकि सबसे अंतिम है निरालंब आत्मा, उसे शब्द का या अन्य कोई भी अवलंबन नहीं है, ऐसा है निरालंब आत्मा! वहाँ तक अब गाड़ी जाएगी। लेकिन एकबार शब्दावलंबन से गाड़ी चलनी शुरू हो जानी चाहिए और वह शब्दावलंबन वाला शुद्धात्मा अनुभव भी देता है! अतः पूछने जैसा कुछ भी नहीं है। सिर्फ आत्मा ही जानने योग्य है। जो 'लक्ष' में आया, वह आत्मा ही जानने योग्य है। यह मार्ग सरल है, सहज है, सुगम है। खुद अपने आपको ध्यान में रखकर सब पूछना, *पुद्गल* का ध्यान रखने की ज़रूरत नहीं है। आत्मा आपके पास है, उसका ध्यान रखना है। आत्मा का स्पष्ट अनुभव करना हो तो छः-बारह महीने विषय बंद रखना। ये सारे अनुभव तो होते रहते हैं, लेकिन दोनों साथ रहें तो पता नहीं चलता कि 'सुगंधी' कहाँ से आ रही है? हमारी आज्ञा पर अमल करने के बाद प्रतिक्रमण करने की शुरूआत करो। उसके बाद ही वह विषय छूटेगा। हमारा यह ज्ञान, ये जो-जो बातें बतलाते हैं न, उन सभी पर अमल करने के बाद महीने-महीने दोषों के प्रतिक्रमण करो। उससे आपको विश्वास हो जाएगा कि यही सच है।

(सूत्र-22)

ज्ञान ऐसी चीज़ है कि, जिसे जानने की ज़रूरत है। ज्ञान को जानना है और वह जाना हुआ जब दर्शन में आता है, 'बिलीफ' में आता है, तब सभी विषय गायब हो जाते हैं।

जगत् के लोगों ने कहा, 'परस्पर देवो भवः'। अरे, लेकिन कब तक परस्पर? अतः जो निरालंब सुख है उसकी तो बात ही अलग है न! अरे, शुद्धात्मा का जो सुख है उसकी भी बात अलग ही है न! 'मैं शुद्धात्मा हूँ' कहा कि बाहर के सारे विचार चले जाते हैं। जिसे 'शुद्धात्मा में ही सुख है', ऐसा यथार्थ रूप से समझ में आ जाए, उसे विषय में सुख नहीं लगता।

ज्ञान ऐसी चीज़ है कि जिसे जानने की ज़रूरत है। ज्ञान जानना है और वह जाना हुआ जब दर्शन में आता है, 'बिलीफ' में आता है, तब सभी विषय गायब हो जाते हैं।

यह ज्ञान तो बहुत अच्छा है, लेकिन अब उस चेतक को मज़बूत कर लेना है। विषय में सुख है, वहाँ पर 'चेतक' बैठाने की ज़रूरत है।

आप उस चेतक के ज्ञाता-दृष्टा और चेतक वह 'चंदूभाई' को चेतावनी देता रहे। 'चंदूभाई' चेतक की सुनते हैं या नहीं, वह आपको देखना है।

सुख की 'बिलीफ' तो स्वरूप में ही रहनी चाहिए। विषय में सुख है, ऐसा 'बिलीफ' में रहना ही नहीं चाहिए। वह तो, केवलदर्शन की तरह स्वरूप में ही सुख है, ऐसा 'बिलीफ' में रहना चाहिए। इस तरह आपने चेतक मज़बूत कर लिया हो तो फिर हर्ज नहीं।

मनुष्य को सुख ही चाहिए। वह सुख यदि मिल रहा हो तो फिर कोई भी कीचड़ में हाथ डालने को तैयार नहीं होगा। यह तो बाहर गरमी लगती है इसलिए इस कीचड़ में हाथ डालता है, ठंडक के लिए, वर्ना कीचड़ में कोई हाथ डालता होगा? लेकिन क्या हो सकता है?

अब आपको एक बार अनुभव से समझ में आ गया कि विषय के बिना ही इस ज्ञान से बहुत सुंदर सुख रहता है। इसलिए फिर आपको विषय में रुचि खत्म होती जाएगी। यह ज्ञान ऐसा है कि विषय के बिना भी बहुत सुंदर सुख रहता है। इसलिए फिर सारे विषय अपने आप स्वत: ही छूट जाते हैं, सभी गिर जाते हैं, लेकिन यह सब अनुभव कर-करके समझ में फिट हो जाए तब!

(सूत्र-23)

मिश्रचेतन में यदि फँस गए तो आत्मा प्राप्त किया हो, फिर भी उसे भटका देगा।

अर्थात् इसमें सच्चा सुख है ही नहीं। यह तो सब कल्पित सुख है। विषयों में भी कल्पित सुख है और अन्य चीज़ों में भी कल्पित सुख है। सच्चा सुख आत्मा में है। सनातन सुख, वह कभी भी नहीं जाता। हमारा यह सुख कभी भी जाता ही नहीं है न! यदि तुम्हें ब्रह्मचर्य पालन करना हो तो इतनी चेतावनी है कि परपुरुष का विचार तक नहीं आना चाहिए और विचार आते ही धो देना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : आपने कहा था मिश्रचेतन से सावधान रहना।

दादाश्री : बस, इस मिश्रचेतन से जो सावधान रहा, उसका कल्याण हो जाएगा! एक शुद्धचेतन है और एक मिश्रचेतन है। उस मिश्रचेतन में यदि फँस गए तो आत्मा प्राप्त किया हो, फिर भी उसे भटका देगा। अत: इसमें विकारी संबंध हुआ तो भटकना पड़ेगा। क्योंकि आपको मोक्ष में जाना है और वह व्यक्ति, वह जानवर में जाने वाला हो तो आपको भी वहाँ खींच ले जाएगा। संबंध हुआ तो वहाँ जाना पड़ेगा। इसलिए इतना ही देखना है कि विकारी संबंध खड़ा ही नहीं हो। मन से भी बिगड़ा हुआ नहीं हो, तब चारित्र कहलाता है। उसके बाद ये सब तैयार हो जाएँगे। बिगड़े हुए मन हों तो वे फ्रैक्चर हो जाते हैं, वर्ना एक-एक लड़की में कितनी शक्ति होती है! वह क्या कोई ऐसी-वैसी शक्ति है? यह तो, अगर हिन्दुस्तान की बहनें हों और साथ में वीतराग का विज्ञान हो तो फिर बाकी क्या रहा?

चारित्र संबंधित बातचीत माँ-बाप अपनी बेटी से कैसे कर सकते हैं? तो कौन ऐसी बातचीत कर सकता है? सिर्फ 'ज्ञानी पुरुष' ही बातचीत कर सकते हैं क्योंकि ज्ञानी किसी लिंग में नहीं होते। वे पुरुष लिंग में नहीं होते, स्त्री लिंग में नहीं होते, न ही नपुसंक लिंग में होते हैं। वे तो आउट ऑफ लिंग होते हैं। बहुत विचित्र ज़माना आया है, फिसलने वाला काल है, लड़कियों को कोई ज्ञान है नहीं, आगे का मार्गदर्शन नहीं है। इन लड़कियों को कितनी परेशानियाँ हैं! इसलिए यह मार्गदर्शन दे रहा हूँ।

इसलिए यह ज्ञान निकला है। मेरी बहुत समय से इच्छा थी कि ऐसा ज्ञान निकले, लेकिन उसका टाइम आना चाहिए न! यह ज्ञान इतनों को तो मिला। सभी को ज़रूरत तो है ही न? इस ज्ञान की तो सभी को ज़रूरत है!

ब्रह्मचर्य व्रत पालन करना है यह कोई छोटे

बच्चों का खेल नहीं है! विषय का विचार ही नहीं आना चाहिए और आ जाए तो उसे तुरंत प्रतिक्रमण करके धो देना। विचार तो आएँगे ही। इस कलियुग में तो निरे ऐसे विचार आते ही हैं! लेकिन उन्हें धो देना।

प्रश्नकर्ता : विषय में हमने आनंद का आरोपण किया है, इसलिए वह आता है, लेकिन हमें ब्रह्म के आनंद की अनुभूति हो जाए तो वह आनंद ऑटोमैटिक छूट जाएगा।

दादाश्री : हाँ, क्योंकि जलेबी खाने के बाद चाय पीओगे, तो अपने आप ही न्याय हो जाएगा न! उसी प्रकार आत्मा का आनंद चखने के बाद विषय अपने आप ही फीके पड़ जाते हैं।

(सूत्र–24)

इस विषय से छूट पाएँ ऐसा भाव रखना। विषय है इसलिए मिश्रचेतन मिलता है। सिर्फ यह मिश्रचेतन बाधक है, दूसरा इस संसार में कुछ बाधक नहीं है।

यह विज्ञान है। संपूर्णभाव से विज्ञान है। अंगारों को क्यों नहीं छूते? वहाँ क्यों चौकन्ने रहते हो? क्योंकि उसका फल तुरंत ही मिलता है। जबकि विषय में तो लालच हो जाता है, इसलिए लालच से फँस जाता है। इन अंगारों को छूना अच्छा है, उसका उपाय है। फिर कुछ भी चुपड़ें तो ठंडा पड़ जाता है। परंतु विषय तो अभी लालच में फँसाकर फिर अगला जन्म दिखाएगा। यह तो अपने ज्ञान को भी धक्का मारे ऐसा है। इतना बड़ा विज्ञान है, इसे भी धक्का मारे ऐसा है, इसलिए सावधान रहना।

खाने-पीने के आकर्षणों में हर्ज नहीं है। आम खाना हो तो खाना। जलेबी, लड्डू खाना। उसमें सामने कोई दावा करने वाला नहीं है न! 'वन साइडेड' (एकतरफ़ा) में हर्ज नहीं है। यह 'टू साइडेड' (दोतरफा) होगा तो ज़िम्मेदारी रहेगी। आप कहोगे कि 'मुझे अब नहीं चाहिए', तो वह कहेगी कि 'मुझे चाहिए'। आप कहो कि 'मुझे माथेरान नहीं जाना है', तो वह कहेगी कि 'मुझे माथेरान जाना है'। इससे तो *उपाधि* हो जाएगी। आपकी स्वतंत्रता खो जाएगी। इसलिए सावधान रहना! यह बहुत समझने जैसी चीज़ है। इसे सूक्ष्मता से समझकर रखो तो काम निकल जाएगा!

जिसे संपूर्ण होना है, उन्हें तो विषय होना ही नहीं चाहिए और वह भी ऐसा नियम नहीं है। वह तो अंतिम जन्म में अंतिम पंद्रह सालों के लिए छूट जाए तो काफी है। इसके लिए कोई जन्मों-जन्म कसरत करने की ज़रूरत नहीं है या त्याग लेने की भी ज़रूरत नहीं है। त्याग ऐसा सहज होना चाहिए कि अपने आप ही छूट जाए! *नियाणां* (अपना सारा पुण्य लगाकर किसी एक चीज़ की कामना करना) ऐसा रखना कि मोक्ष में जाने तक जो दो-चार जन्म हों, वे बिना शादी वाले हों तो अच्छा। उस जैसा कुछ भी नहीं है। *नियाणां* ही ऐसा करना! फिर जो होगा वह देख लेंगे! और यदि यह एक बोझ गया न, तो सारे बोझ गए! यह एक है तो सब कुछ है!

अत: इस विषय से छूट पाएँ, ऐसे भाव रखने हैं। विषय है इसलिए मिश्रचेतन मिलता है। सिर्फ यह मिश्रचेतन बाधक है और कुछ इस संसार में बाधक नहीं है। स्त्री-पुरुष, यह ज्ञान मिलने के बाद 'इस' व्यवहार में यदि बहुत जागृति रखें तो काम निकल लेंगे। सांसारिक दूसरी बुरी आदतें हों, वे तो एकपक्षी हैं, जबकि यह तो मिश्रचेतन के साथ व्यवहार है। मिश्रचेतन के साथ यह व्यवहार बंद हो गया उसका तो काम ही हो जाएगा! वह भगवान हो जाएगा!

जय सच्चिदानंद

विषय-रस गारवता

प्रश्नकर्ता : अहंकार रूपी गारवता (संसारी सुख की ठंडक में पड़े रहने की इच्छा)?

दादाश्री : वह गारवता नहीं कहलाती। अहंकारवाला तो हिटलर जैसे कर्म भी करता है और धर्मादा जैसे उच्च कार्य भी करता है। लेकिन यह गारवता यानी क्या? कि जिसमें संपूर्ण मनुष्यपन का सारा समय निरर्थक ही गवाँ देना। ऐसी गारवता आपने नहीं देखी है?

गारवता यानी क्या कि किसी मिल के सामने रास्ते के पास तालाब जैसा गड्ढा भरा पड़ा हो, और उसमें हरदम पानी भरा रहता हो। वह गंदा पानी फिर बहुत बदबू मारता है। यह पानी वहाँ हमेशा भरा रहता है, इसलिए पानी में दो-दो, तीन-तीन फीट कीचड़ होता है। तो गर्मी के दिनों में भैंस क्या करती है? भैंस का स्वभाव बहुत गरम, इसलिए उससे दोपहर की गर्मी सहन नहीं होती, इसलिए फिर जब वह ऐसा गड्ढा देखती है, तब उसमें जाकर धप्प से बैठ जाती है। बैठते ही सारा कीचड़ उसके पूरे बदन पर लग जाता है। फिर भैंस क्या करती है कि सिर्फ अपना मुँह ही पानी से बाहर रखती है और सारा शरीर कीचड़ में डूबा रहे, ऐसे रखती है। कीचड़ में उसे फ्रीज़ जैसा लगता रहता है। अब इसमें बदबू की तो उसे समझ ही नहीं है। ऐसे अच्छे-बुरे की उसे समझ तो है ही, लेकिन बदबू की उसे परवाह नहीं होती। वह तो बस कीचड़ की ठंडक में से निकलती ही नहीं। अब उसके मालिक को तीन बजे उसकी ज़रूरत हो, तब मालिक आकर कहता है कि, 'चल, चल बाहर निकल।' लेकिन वह नहीं आती। फिर घास का गट्ठर लाकर दिखाता है फिर भी भैंस कान हिलाकर देखती ज़रूर है, लेकिन फिर कुछ भी नहीं। ऐसा फ्रीज़ छोड़कर वह क्या बाहर आएगी? फिर वह मालिक समझ जाता है कि इसे कोई लालच दूँ तभी आएगी, वर्ना नहीं आएगी। उसे ठंडक हो गई है, इसलिए अब यह नहीं उठेगी। फिर वह बिनौले की टोकरी लेकर आता है। उसमें दूसरी सभी चीज़ें भी डाली होती हैं और भैंस को दिखाकर कहता है कि, 'ले, ले, ले'। भैंस उधर देखती है लेकिन फिर भी उसे टोकरी की कुछ पड़ी ही नहीं होती। ऐसी फ्रीज़ जैसी ठंडक उसे और कहाँ मिले?

उसी प्रकार, इस जगत् के लोग विषयों की फ्रीज़ जैसी ठंडक में पड़े हुए हैं। विषयरूपी गारवता है, उसमें पड़े हुए हैं। वह कीचड़ निरी बदबू मारता है, मालिक टोकरी में अच्छा खाना देता है, फिर भी वहाँ पर उसे यह खाना अच्छा नहीं लगता। इस गारवता में सारा जगत् फँसा हुआ है। भले ही फँसे हुए हों। फँसे हैं, उसमें परेशानी नहीं है। कितनी मुद्दत के लिए फँसे हैं उसमें भी परेशानी नहीं है, लेकिन आज से नक्की तो करना चाहिए न कि अब यह नहीं चाहिए। कभी भी नहीं। सदा उसके विरोधी तो रहना चाहिए न? वर्ना यदि दोनों एकमत हो गए, अंदर-बाहर एकमत हो गया कि खत्म हो गया। आपमें कितना एकमत होता है? या अलग रहता है?

प्रश्नकर्ता : अलग रहता है।

दादाश्री : हमेशा? मुझे नहीं लगता कि ये शूरवीर अलग रह पाएँ, ऐसे हैं! इन शूरवीरों की क्या बिसात कि जिनकी जागृति मंद हो चुकी है! वर्ना विषय तो खड़ा ही नहीं होगा न! और शायद यदि खड़ा हो जाए तो भी पूर्व प्रयोग होने के कारण। लेकिन तब खुद की दृष्टि मिठासवाली नहीं होती,

निरी ऊबवाली दृष्टि होती है! जैसे नापसंद भोजन खाना पड़े, तब उसका चेहरा कैसा होता है? खुश होता है? चेहरा भी उतर जाता है न! लेकिन खाए बगैर चारा नहीं है, भूख के मारे खाना पड़ता है। यानी उसे नापसंद है!

जगत् ऐसी गारवता में पड़ा हुआ है। फिर भी जहाँ पूर्व प्रयोगी होने के कारण बँधे हुए हैं, वहाँ कोई चारा ही नहीं है। लेकिन फिर भी उसके प्रति निरंतर चिढ़, चिढ़ और चिढ़ ही रहनी चाहिए। और मन में ऐसा होते रहना चाहिए कि यह मुझे कहाँ मिला फिर से? ऐसी जागृति है ही कहाँ? पूरी डलनेस (मंदता) है!

जो गारवता में फँसा हुआ है, वह कैसे निकले? जब ज़बरदस्ती खाना पड़े, तब क्या चेहरा खुश होता है? लेकिन ये चेहरे तो उतरे हुए होते ही नहीं, जैसे सभी बगीचे में टहलने निकले हों, ऐसे चेहरे दिखते हैं! वर्ना हमारे शब्द नोट करके यदि उसके अनुसार चले न तो पिछले सभी दोष निकल जाएँ। बाकी पूर्व प्रयोग तो है ही, उसके लिए हमसे मना नहीं किया जा सकता न! यह जो खाना पड़ता है, वह पूर्व प्रयोग के आधार पर है। लेकिन अपना चेहरा उतरा हुआ होना चाहिए। सामनेवाला कहे कि 'खाने के लिए बैठिए,' तब खुद ज़बरन बेमन से खाने बैठे। इस तरह बेमन से कभी भी खाया है क्या? उसमें बहुत मज़ा आता है? यानी इसका कानून यदि समझ जाए कि इसके प्रति चिढ़, चिढ़ और चिढ़ ही रहनी चाहिए। लेकिन यह तो तालाब देखा कि भैंस खुश! फ्रीज़ आया! अब क्या हो सकता है इसका?

यह सब गारवता में फँस चुका है, इसलिए प्रभु से विनती करता है, 'हे प्रभु, रह्यु छे फसी!', अब इस गारवता में से छूटे तो निबेड़ा आए। वह गंध, वह फोटो भी कैसा आएगा? ऐसा सब दिन-रात मन में खटकता रहता है। लेकिन यह तो चाय की तरह पीता है। जब चाय पीनी हो, तब कहेगा, 'चाय बनाओ ज़रा।' फिर चाय बनाकर आराम से पीता है! ऐसा कैसे चलेगा? फिर भी कुछ सोचे तो भी उत्तम है। बाकी हम तो सावधान करते हैं कि जैसे-तैसे बच जाए तो अच्छा। फिर और क्या करें? हम उसे थोड़े ही मारेंगे? बाकी ज्ञानी मिलें फिर भी नहीं बच पाए, तो फिर उसी की भूल है न!

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए भारत में टी.वी. चैनल पर...

- '**साधना**' पर हर रोज़ सुबह 7-50 से 8-15 (हिन्दी में)
- '**दूरदर्शन उत्तरप्रदेश**' पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 और दोपहर 3 से 4 (हिन्दी में)
- '**दूरदर्शन सह्याद्रि**' पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-45 (मराठी में)
- '**आस्था कन्नड़ा**' पर हर रोज़ दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्नड़ा में)
- '**दूरदर्शन चंदना**' पर हर रोज़ शाम 7 से 7-30 (कन्नड़ा में)
- '**दूरदर्शन गिरनार**' पर रोज़ सुबह 7-30 से 8-30, रात 9-30 से 10-30 (गुजराती में)
- '**वालम**' पर हर रोज़ शाम 6 से 7 (सिर्फ गुजरात राज्य में) (गुजराती में)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में सत्संग कार्यक्रम

थाणे त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

30 जनवरी (शुक्र) सुबह 10 से 12-45 - **श्री शिव मंदिर में स्थापित सभी भगवंतो की प्राणप्रतिष्ठा**
शाम 6 से 8 - **आप्तपुत्र सत्संग**
31 जनवरी (शनि) सुबह 10 से 12-45 - **श्री कृष्ण मंदिर में स्थापित सभी भगवंतो की प्राणप्रतिष्ठा**
शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**
1 फरवरी (रवि) सुबह 10 से 12-45 - **श्री सीमंधर स्वामी मंदिर में स्थापित सभी भगवंतो की प्राणप्रतिष्ठा**

स्थल : त्रिमंदिर, ग्लोबल हॉस्पिटल के पास, साकेत-बालकुम रोड, माजिवाड़ा, थाणे, महाराष्ट्र. **संपर्क :** 9323528901

सूचना : प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव में रहने की सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाएगी, रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। रजिस्ट्रेशन की अधिक जानकारी Akonnect ऐप पर उपलब्ध है।

राजकोट

7 & 9 फरवरी (शनि-सोम) शाम 7 से 10 - **सत्संग** और **8 फरवरी** (रवि) शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**

स्थल : ओपन ग्राउन्ड, मवडी इन्डोर स्टेडियम के सामने, 80 फूट रोड, मवडी, राजकोट. **संपर्क :** 9909977440

वेरावल त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

13 फरवरी (शुक्र) शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग**
14 फरवरी (शनि) शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि** (नए मुमुक्षुओं के लिए)
15 फरवरी (रवि) सुबह 10 से 12-30 - **प्राणप्रतिष्ठा** और शाम 4-30 से 7-30 - **प्रक्षाल-पूजन-आरती**

स्थल : त्रिमंदिर, डिवाईन रिसोर्ट के पास, छत्रोडा सर्विस रोड, वेरावल. **संपर्क :** 9924344459

विशेष सूचना : प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम केवल एक दिन का है, इसलिए रात्रि आवास की सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाएगी। जो महात्मा-मुमुक्षु उसी दिन सीधे ही महोत्सव स्थल पर पहुँचेंगे, उनके लिए बाथरूम-टोइलेट की सुविधा स्थल पर रहेगी।

अडालज

21 फरवरी (शनि) शाम 5 से 7 - **सत्संग** और **22 फरवरी** (रवि) शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**
19 मार्च (गुरु) - **पूज्य नीरुमाँ की 20वी पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम**

दिल्ली

27-28 फरवरी (शुक्र-शनि) शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** और **1 मार्च** (रवि) शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**

स्थल : JMD टेंट्स, स्वर्ण जयंती पार्क, सेक्टर 10, रोहिणी, दिल्ली. **संपर्क :** 8287705272, 8920648993

पुणे

13-14 मार्च (शुक्र-शनि) शाम 6 से 9 - **सत्संग** और **15 मार्च** (रवि) शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

स्थल : एक्जिबिशन ग्राउन्ड AISSMS, RTO ऑफिस के पास, कैनेडी रॉड, पुणे. **संपर्क :** 7875740566

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687, **भावनगर :** 9313882288, **अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** 9574001445, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

वड़ोदरा : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 28 से 30 नवम्बर 2025

अडालज : पूज्य नीरुमाँ का 82वाँ जन्मदिन : ता. 2 दिसम्बर 2025

प्रभात फेरी

पूज्य नीरुमाँ की समाधि पर

फूड मेला

इनॉगरल

अहमदाबाद : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 12 से 14 दिसम्बर 2025

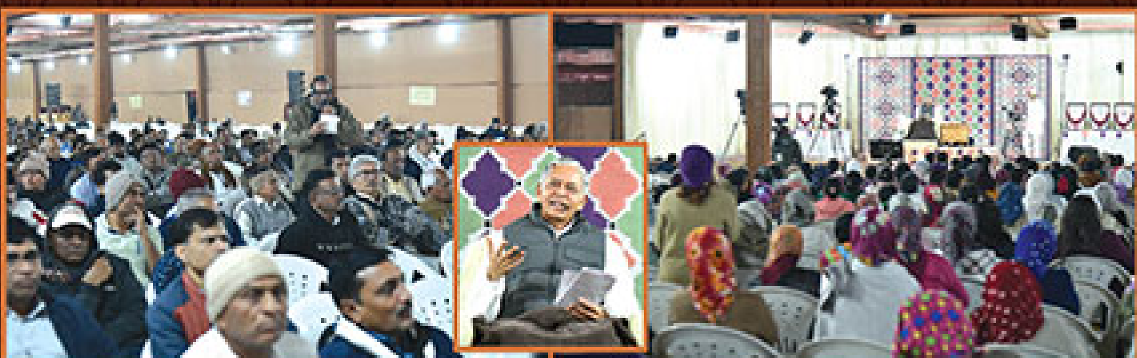

जनवरी 2026
वर्ष-21 अंक-3
अखंड क्रमांक - 243

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Licensed to Post Without Pre-payment
No. PMG/NG/036/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

मिश्र चेतन से कायम पूरा संसार

भगवान ने कहा था कि बावड़ी में जाकर स्पंदन करना, पर इस मिश्रचेतन के आगे स्पंदन मत करना। मिश्रचेतन के साथ स्वाभाविक व्यवहार हो, उसमें हर्ज नहीं है, पर वहाँ पर स्लिप नहीं होना चाहिए। कोई फिसले तब हम उसे सावधान करते हैं। अचेतन हो, वहाँ हर्ज नहीं है। यह मिश्रचेतन बीच में आ जाए तो हम सावधान करते हैं। अरे, अहंकार करके भी सचेत हो जाओ, असावधान रहे वह नहीं चलता। वर्ना अगले जन्म बिगड़ जाएँगे। यह पकौड़े दावा दायर करते हैं कि हमारे साथ भोग क्यों भोगते हो ? नहीं, वे दावा दायर नहीं करते। क्योंकि वह अचेतन है। जबकि मिश्रचेतन तो दावा करता है क्योंकि उसके भीतर ठंडक नहीं है। उसके भीतर भारी जलन है इसीलिए वह दावा दायर करता है। मिश्रचेतन, वह मोक्ष तो नहीं होने देता बल्कि अंदर जो सुख आता है, उसमें भी अवरोध डालता है।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral - Pratappura Road, At - Chhatral, Tal : Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.